https://www.studiestoday.com

कक्षा-10

नुपूर

(नृत्य)

भाग-II

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER

Visit us at www.joinindianarmy.nic.in

or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11.	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

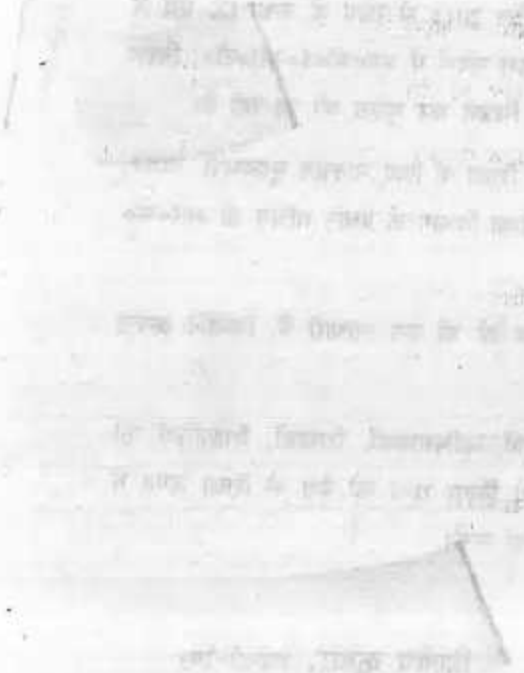

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल 2013 से राज्य के कक्षा IX एवं X हेतु ऐच्छिक विषयों का पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस संदर्भ में एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना द्वारा विकसित प्रस्तुत पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री जीतन राम मांझी, शिक्षामंत्री, श्री वृशिण पटेल एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री आर०के० महाजन के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

दिलीप कुमार, आई०टी०एस०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना।

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : ₹ 23.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा हेबा प्रिंटिंग वर्क्स, करमली चौक, पटना-8 द्वारा 5,000 प्रतियाँ मुद्रित।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नुपूर

भाग–II

कक्षा 10 के लिए ऐच्छिक नृत्य की पाठ्यपुस्तक

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दिशा बोध

- **श्री अमरजीत सिन्हा**, प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार, पटना।
- **श्री राहुल सिंह**, राज्य परियोजना निदेशक, बिहार माध्यमिक शिक्षा परिषद्, पटना।
- **श्री हसन वारिस**, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना।
- **डॉ. सैयद अब्दुल मुईन**, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना।
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर ।

समन्वयक :

- **डॉ. रीता राय**, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना।

लेखक समूह :

- **डॉ. अर्चना चौधरी**, उच्च विद्यालय, अमरपुरा, नौबतपुर, पटना।
- **सुश्री लीना मिश्रा**, राजकीय उर्दू मध्य विद्यालय, खानमिर्जा, महेन्द्रु, पटना।

समीक्षक :

- **श्रीमती नीलम चौधरी** (कथक नृत्यांगना)
- **श्री भगवान बेहेरा** (ओडिसी विभाग), भारतीय नृत्य कला मन्दिर ,पटना।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आमुख

ऐच्छिक विषय की इस पुस्तक के विकास क्रम में इस बात पर ध्यान दिया गया है कि बच्चों के स्कूली जीवन के अनुभवों के साथ नृत्य को जोड़ते हुए बच्चों की आंतरिक वृत्तियों को विकसित एवं अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाए। यह ज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करती है, साधारण जनों को उपदेश देती है और अल्पज्ञों का मनोरंजन करती है।

प्रत्येक बच्चा अपने जीवन के रंगमंच का कुशल कलाकार होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हरेक पल वह नाचता ही तो रहता है। मनुष्य के जीवन की छत्रछाया में पलने वाली नृत्यकला मनुष्य जाति को हर प्रकार की शिक्षा देती है–धार्मिक शिक्षा, सांस्कृतिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं सामाजिक शिक्षा। वैदिक काल से नृत्यकला आध्यात्मिक उन्नति के साथ मनोरंजन का साधन भी रही है जो भावनाएँ गायन और वादन द्वारा प्रस्तुत नहीं की जा सकतीं वे सब नृत्य के द्वारा पेश की जा सकती हैं।

दशम् वर्ग के बच्चों के मस्तिष्क का इतना विकास तो हो ही जाता है कि वह भारत के विभिन्न प्रांतों में प्रचलित नृत्य, शास्त्रीय और लोक नृत्य की पहलुओं को समझने के प्रयास में सक्षम बन सके। बच्चों को यह समझाने का प्रयास किया गया है कि शास्त्रीय नृत्य नियमों पर आधारित होता है। नृत्य के द्वारा मनोरंजन तो होता ही है, शरीर की शक्ति भी बढ़ती है। भारत में उत्सव, त्योहारों पर नृत्य के द्वारा उल्लास पूर्ण वातावरण बन जाता है। पशु-पक्षी भी अपने आनंद की भावना को प्रकट करने के लिए नृत्य करते देखे जा सकते हैं। जैसे–मोर, कबूतर इत्यादि। इस पुस्तक में भारतीय शास्त्रीय नृत्य का प्रकार, ताल परिचय एवं नृत्य में योगदान करने वाले महान हस्तियों की जीवनी को बड़े ही सटीक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इस पुस्तक का विकास निर्णयानुसार को अत्यलप तथा शीघ्रता में किया गया है। संभव है कहीं-कहीं कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों, जिन्हें विद्वतजनों के सुझाव से अगले संस्करण में सुधारने का प्रयास किया जायेगा।

हम विशेष रूप से विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग एवं संकाय सदस्य, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक के विकास में शामिल विद्वत्जनों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिनके मार्गदर्शन में इस महती कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराया गया। हम उन कर्मचारियों को धन्यवाद देते हैं जिनकी एकनिष्ठ सक्रियता ने कार्य को सुगम बना दिया।

हसन वारिस
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार
पटना-800 006

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वर्ग दशम् (Dance)

प्रकरण	उप प्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
परिचय	1. भारतीय नृत्य कला का इतिहास	विभिन्न शास्त्रीय नृत्य की वेश-भूषा एवं रूप सज्जा का ज्ञान	नृत्य के पद संचालन एवं भाव, परिधान के अनुसार परिचय समझाना।
परिभाषा	2. कथक-लय,लय के प्रकार, परण, मात्रा, आवर्तन मुद्रा, हस्तक, तांडव, लास्य **भरतनाट्यम**-अल्लारिपु, यतिस्वरम्, मुद्रा, मुद्रा के प्रकार, ध्वनि, कंपन। **मणिपुरी**-हस्तक, बोलगीत, नाट्य अभिनय, मुद्रा, मुद्रा का प्रकार। **ओडिसी**-ताल-त्रिपट, खेमटा, भाव, अभिनय, मुद्रा, मुद्रा के प्रकार।		हाथ से ताली-खाली देकर लय को समझाना। नृत्य कर के सभी शब्दों का वर्णन करना ।
	3. तीनताल, झपताल, एकताल का पूर्ण परिचय।		मात्रा विभाग के साथ ठाह, दून, चौगुन में अभ्यास कराना
	4. बिहार के लोक नृत्यों का वर्णन।	जट-जटिन, झूमर, झिझिया एवं झेमटा।	विभिन्न लोकनृत्यों के पद संचालन के अनुरूप नृत्य सीखना।
	5. पाश्चात्य नृत्य शैलियों का अध्ययन।		
	6. नगमा और तबला/पखावज के संगत के साथ नृत्य प्रस्तुत करने की क्षमता।		संगत के वाद्ययंत्रों के साथ अभ्यास करना।

(विद्यार्थी समूह, शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से किसी एक नृत्य की शिक्षाग्रहण कर सकते हैं)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

1

भारतीय नृत्यकला का इतिहास

नृत्य अंगों, उपांगों और भावों की सौंदर्यमयी भाषा है । भारतीय नृत्य का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता का इतिहास । प्रागैतिहासिक काल में खुदाई से प्राप्त मूर्तियाँ और मानव आकृतियाँ, नृत्य के उद्भव और विकास की ओर इंगित करती हैं । वैदिक काल से ही नृत्यकला आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ मनोरंजन का साधन भी रही है । नृत्य द्वारा नृत्यकार अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करता है । मनुष्य के हृदय में जो भाव सोये हुए पड़े रहते हैं वे सब नृत्य के द्वारा शरीर की चेष्टाओं और गतियों से प्रदर्शित किए जाते हैं । वैदिक काल में नृत्य, सामाजिक जीवन का एक प्रमुख अंग था । धार्मिक यज्ञ से लेकर सामाजिक उत्सव सभी समारोह में नृत्य की परम्परा और प्रतिष्ठा थी । समाज में सभी लोग स्त्री पुरुष मिलकर नाचते थे । उत्तर वैदिक काल में नृत्य की व्यवसायिक परम्परा भी शुरू हो गई थी जो निरन्तर चलती ही गई । वैदिक काल में आर्यों के साथ-साथ रामायण और महाभारत काल का भी विकास शुरू हो गया । इस युग में समाज में उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक सभी लोग नृत्य में बढ़-चढ़ कर रुचि लेते गए । रामायण काल में जब राजा ही संगीत के मर्मज्ञ थे तो प्रजा क्यों न हो । इस युग में मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने के लिए जिन विद्या, कला की अनिवार्यता की शिक्षा दी जाती थी उसमें नृत्य और संगीत भी था । अयोध्यानगरी भी गणिकाओं और नाटक मंडलियों से घिरी रहती थी । शास्त्रीय नृत्यों के प्रति रामायण काल में जो रुझान बढ़ा था वह महाभारत काल में अधिक विकसित हो गया । युधिष्ठिर के राज्याभिषेक में हजारों नट-नटनियों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया था । इस प्रकार महाभारत काल में नृत्य के सर्वांगीण विकास के अधिक साक्ष्य मिले हैं ।

जैनधर्म और बौद्ध धर्म का काल निवृत्ति का काल था । अत: आरम्भ में जहाँ बौद्ध भिक्षुओं ने अनेक नर्तकियों-को भिक्षुणी बनाया था वहीं हमें देखने को यह मिलता है कि अपने-अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रबल माध्यम के रूप में उन्हें संगीत, नृत्य, नाट्य आदि कलाओं को भी अपनाना पड़ा था । राजकुमार सिद्धार्थ इन सभी कलाओं में निपुण थे । जैन व बौद्ध धर्म के अभ्युदय काल में ही भारत में मौर्य साम्राज्य का उत्थान व पतन हुआ । चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में ललित कलाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन, कलाकारों के सार्वजनिक प्रदर्शन आदि से संबंधित चीजों का उल्लेख भी किया है । कौटिल्य ने ये भी कहा कि-राजा को

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चाहिए कि वह गायन, वादन, नृत्य, नाटक, वीणा, वेणु, मृदंग और करताल में निपुण लोगों को राजदरबार में नियुक्त करें। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन काल में भारतीय नृत्य और संगीत जनजीवन में पूरी तरह रच-बस गई। सम्राट कनिष्क के काल में संगीत का विकास द्रुत गति-से हुआ क्योंकि कनिष्क स्वयं महान संगीत प्रेमी थे और कलाकारों का काफी सम्मान करते थे । गुप्तवंश के सम्राट समुद्रगुप्त स्वयं एक संगीतज्ञ थे । उनके सिक्के में समुद्रगुप्त को वीणा बजाते दर्शाया गया है ।

मध्यकाल में विशेषकर मुगलकाल में भारत में विभिन्न नृत्य शैलियों का विकास हुआ । दक्षिण भारत में राजा कृष्णदेव राय के काल में संगीत की उन्नति पराकाष्ठा पर थी । विजय नगर राज्य में नृत्य का भी खूब प्रचार था। कृष्णदेव राय ने तो नर्तकियों के लिए एक गणिका नगर ही बसा दिया था । उन्हें मंदिरों में नाचने के लिए भूमि दान में दी जाती थी । ये सभी नर्तकियाँ देवदासी के रूप में मंदिरों में रहा करती थीं । उत्तर भारत में मुसलमानों के आगमन से, नृत्य कला में काफी बदलाव आया, साथ-साथ इसे राजकीय प्रश्रय भी दिया गया । नृत्य ईश्वर की आराधना न रहकर राजाओं और सभासदों के मनोरंजन का साधन बन गया । नए-नए प्रयोग किए गए और संगीत में काफी रचनाएँ भी हुईं । शास्त्रीय नृत्य 'कथक' का तो स्वरूप बिल्कुल ही बदल गया । राजदरबारों में तो संगीतज्ञों को काफी सम्मान दिया जाने लगा । अकबर के दरबार में नौ रत्नों में संगीतज्ञ तानसेन भी एक रत्न थे। कथक नृत्य का वर्तमान स्वरूप मुगलकाल से काफी प्रभावित है । नृत्य में घरानों का विकास भी इसी काल में हुआ ।

अंग्रेजी सत्ता काल के भारतीय नृत्य की प्रवृत्तियों पर यदि हम सर्वांगीण रूप से दृष्टिपात करें तो हम देखते हैं कि इस युग में बहुसंख्यक नर्तक, नर्तकियाँ व नाट्याचार्य मन्दिरों, राज दरबारों या रईसों के महफिलों से जुड़े थे और अपनी कला के सार्वजनिक प्रदर्शन में मग्न थे ।

1947 ई० में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् से आजतक के काल में भारतीय नृत्यकला का प्रचार-प्रसार खूब हुआ है। अब इसे सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र नहीं समझा जाता है । अब हम सभी इसकी शास्त्रीयता को परखते हैं और लोगों को शिक्षित करने का भी काम कर रहे हैं । भारत के सभी नगरों में शिक्षण-केन्द्र स्थापित हो गए हैं। विद्यालयों महाविद्यालयों में विधिवत पाठ्यक्रम बनाकर इसकी शिक्षा दी जा रही है । बहुत सी संस्थाएँ नृत्य का व्यवसायिक प्रशिक्षण दे रही हैं । इस विषय में अनेक शोध-कार्य भी हो रहे हैं ।

सभी नृत्यशैलियों के प्रदर्शनात्मक स्वरूप में भी काफी अंतर आया है । नृत्य की संरचना, वेश-भूषा अलंकरण, रूप-सज्जा, ध्वनि प्रकाश सभी आधुनिक परिवेश के अनुसार स्थापित हैं । सन् 1954 ई० में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी की स्थापना होने के बाद संगीतज्ञों को संगीत, नृत्य, नाट्य, आदि कलाओं के प्रचार-प्रसार में भी काफी बल मिला है। अन्त में, हम यह कह सकते हैं कि भारत में नृत्यकला का सतत्

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विकास हुआ है और भविष्य में भी यह सतत् समुन्नति की ओर ही अग्रसित होता रहेगा ।

वर्तमान समय में भारतीय नृत्य को दो भागों में विभक्त किया गया है–

(1) शास्त्रीय नृत्य (2) लोक नृत्य । शास्त्रों के नियम पर आधारित नृत्य को ही शास्त्रीय नृत्य कहा जाता है । भारतवर्ष में शास्त्रीय नृत्य का वर्गीकरण इस प्रकार है –

(1) कथक नृत्य (2) भरतनाट्यम (3) ओडिसी (4)कथकली (5) मणिपुरी (6) कुच्चीपुड़ी (7) मोहिनी अट्टम । लोकनृत्य प्रादेशिक होते हैं ।

भरतनाट्यम (तमिलनाडु प्रदेश में प्रचलित)

भरतनाट्यम भारत के प्राचीन परम्परागत शास्त्रीय नृत्यों में प्रमुख नृत्य है। इस नृत्य शैली का पुराना नाम "दासी-अट्टम" है। इसका अर्थ है -देव दासियों द्वारा किया जाने वाला खेल। भरतनाट्यम के शिक्षक नत्तुवन कहे जाते हैं। जो अपनी शिष्याओं को निःशुल्क रूप से शिक्षा देते थे। जिससे शिष्याएँ कला में पारंगत होकर धन अर्जित करती थीं और उस राशि का एक अंश अपने गुरु को आजीवन समर्पित करती रहती थी। बिना अपने गुरु के वे अपनी कला का प्रदर्शन नहीं करती थी।

भरतनाट्यम का प्रदर्शन क्रमशः छः चरणों में पूर्ण होता है, जिनके नाम हैं–

(क) अलारिपु–इस शब्द का अर्थ "विकसित या प्रस्फुटित होना" है। पैरों को सटाकर "समपाद" स्थिति में रखकर नमस्कार की मुद्रा के पश्चात् ही नृत्त प्रारंभ होता है। इस प्रारंभिक कार्यक्रम में ग्रीवा, नेत्र और भौं के विभिन्न परिचालनों से, नृत्य किया जाता है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें शरीर के दोनों भागों का एक समान परिचालन होता है। अर्थात् जैसा दाहिना अंग का परिचालन होता है, ठीक उसी प्रकार की स्थितियाँ बायें अंग से प्रस्तुत की जाती है।

(ख) जतिस्वरम्–अलारिपु के पश्चात "जेथीस्वरम" या "यातिस्वरम" प्रस्तुत किया जाता है । इसमें ताल के विभिन्न करतब दिखाए जाते हैं। नर्तकी कमर पर हाथ रखकर पैरों के सौधे परिचालन से ताल दिखाती है उसके बाद वह जति का काम उठाती है । मृदंगवादक व नर्तकी क्रमशः "सोलुकूट" और "चोल्लु" का काम दिखाते हैं। मृदंग में बजने वाले बोल "चोल्लु" तथा पद संचालन से निकलने वाली घुंघरू की ध्वनि "सोल्लुक्कतु" कही जाती है।

(ग) शब्दम्–इसके द्वारा पहली बार साहित्य या सार्थक शब्दावली से दर्शकों को परिचित कराया जाता है और अभिनय की झलक प्रारंभ होती है। जेथीस्वरम की किसी तिरमान (अर्थात तिहाई) के बाद गीत प्रारंभ हो जाता है। इस गीत में अधिकतर ईश्वर की वंदना होती है। नर्तक यह भाव दिखाकर "नमस्कार" करता हुआ पीछे हटता जाता है।

(घ) वर्णम्–यह भरतनाट्यम का सबसे रोमांचक अंश होता है। इस कार्यक्रम में नृत्य व अभिनय दोनों ही पूर्ण रूप में देखने को मिलते हैं। "वर्ण" के पीछे चलने वाले गीत पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणम् में विभक्त होते हैं। पल्लवी में एक संक्षिप्त सा प्रश्न किया जाता है, जैसे–"आज चांद क्यों नहीं

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

किसी वाक्य को अभिनय द्वारा प्रकट करके उसमें रस की उत्पत्ति होती है तो उसे नाट्य कहते है। ताल एवं लय के साथ हाथ-पैर चलाने को नृत्त कहते हैं। जब नाट्य और नृत्त दोनों मिल जाते हैं तो उसे नृत्य कहते हैं। जब कोई भी शब्द का अभिनय ताल एवं लय से किया जाए तो वह नृत्य कहलाता है। इस प्रकार कथक, नृत्त और नृत्य दोनों का मिला हुआ रूप है।

जिस नृत्य में वीर रस की प्रधानता होती है उसे तांडव नृत्य कहते हैं। एक कथा के अनुसार, त्रिपुरासुर राक्षस का वध करने के लिए भगवान शंकर ने जो क्रोध-भरा नृत्य किया उसे तांडव कहा जाता है। तांडव नृत्य पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त हैं क्योंकि-उसमें ऐसे अंगहारों का प्रदर्शन होता है जो स्त्रियों के लिए उपयुक्त नहीं है। स्त्रियाँ शृंगार एवं कोमलता की प्रतीक होती है इसलिए उसके लिए लास्य नृत्य अधिक मनोरंजक और उपयुक्त होता है। वैसे आधुनिक काल में तांडव और लास्य पुरुष एवं स्त्री दोनों कलाकारों द्वारा की जाती है। शिव के गण तंडु ने ऋषियों को तांडव की शिक्षा दी तो पार्वती ने वाणासुर की पुत्री उषा को लास्य नृत्य सिखाया। लास्य के सम्पूर्ण अंगों के प्रदर्शन हेतु श्रीकृष्ण ने रास मंडल की स्थापना की। रास नृत्य को 'हल्लीसक' भी कहते है। इसमें गीत, नृत्त, नृत्य, अभिनय सभी तत्त्वों का सम्मिश्रण होता है।

समय के परिवर्त्तन के साथ-साथ कथक नृत्य के स्वरूप में भी परिवर्त्तन होते चले गए। मध्यकाल में मुसलमानी साम्राज्य स्थापित हुआ। ईश्वर-उपासना की भारतीय कला, अब राजाओं के मनोरंजन का साधन बनती चली गई। बड़े-बड़े नृत्याचार्यों को महल में नृत्य की शिक्षा देने की नौकरी दी गई। नर्त्तक और नर्त्तकियों को शराब का प्याला संतुलित रूप में लेकर राजा की आज्ञा का पालन करना होता था। इस स्थिति में नृत्य करने से पैरों के विविध चालों पर नियंत्रण होने लगा और पैरों की तैयारी बढ़ गई। नृत्य के पूर्व भगवान की स्तुति की जगह सलामी ने ले ली। इस प्रकार मुगलकाल में कथक नृत्य का स्वरूप काफी बदल गया। संगीत प्रेमी राजाओं ने नृत्यकारों को अपने दरबार में विशेष रूप से प्रश्रय दिया। भक्ति प्रधान गीतों का स्थान शृंगारिकता ने ले लिया। नृत्य और संगीत दोनों का रूप बदल गया। कथक मुगल नबाब वाजिदअली शाह संगीत प्रेमी शासक थे। उनके दरबार में नृत्य और संगीत को दूसरा जीवन प्राप्त हुआ। सम्राट स्वयं कृष्ण बनकर रास नृत्य करते थे।

कथक नृत्य अपने प्रस्तुतिकरण में जितना स्वतंत्र है उतना शायद कोई दूसरी नृत्य शैली नहीं। प्रत्येक कथक नर्त्तक का अपना अलग अंदाज होता है, वह उसी अंदाज में नृत्य प्रस्तुत करता है और अपनी क्षमता से कार्यक्रम का बखूबी संयोजन करता है। कथक नृत्य का दो पक्ष होता है –नृत्त और नृत्य। कथक में पहले थाट, आमद सलामी तोड़े, ततकार आदि की प्रस्तुति की जाती है तदुपरान्त भाव या अभिनय की प्रस्तुति होती है। घुँघुरू और पैरों की तैयारी का काम जितना कथक नृत्य में होता है उतना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विषयानुक्रम

क्र०	विषय	पृष्ठ
1.	भारतीय नृत्य कला का इतिहास	1-13
2.	पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान : **कथक**–लय, लय का प्रकार, परण, मात्रा, आवर्तन, हस्तक, तांडव, लास्य, मुद्रा **भरतनाट्यम**–अल्लारिपु, जतिस्वरम्, ध्वनि, कंपन, मुद्रा **ओडिसी**–त्रिपट, छेमटा, भाव, मुद्रा, अभिनय **मणिपुरी**–लास्य, हस्त, अभिनय, मुद्रा	14-25
3.	तालों का परिचय झपताल, एकताल, तीनताल	26-30
4.	बिहार के लोकनृत्यों का वर्णन	31-36
5.	पारंपरिक वेशभूषा एवं रूप-सज्जा	37-42
6.	पाश्चात्य नृत्य शैलियों का अध्ययन	43-45

विविध : (ज्ञान विस्तार हेतु)

1.	कथक नृत्य के घरानों का वर्णन	47-49
2.	भारतीय संगीत की लिपि (Notation)	50
3.	नृत्याचार्यों के चित्र	51-55
4.	नृत्य में प्रयोग होनेवाले वाद्ययंत्रों के नाम सचित्र	56-60
5.	मुद्रा के प्रकार सचित्र	61-73
6.	भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों एवं संबंधित नृत्यों के गुरु, नर्तक और नृत्यांगनाओं की सूची–	74-77

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

किसी और नृत्य शैलियों में नहीं होता है। तबला या पखावज से इस नृत्य में संगत की जाती है और तबले के बोल को घुँघरूओं के माध्यम से बखूबी निकाली जाती है। इस नृत्य में चक्कर का प्रयोग अद्वितीय है। भ्रमरी के प्रकार जैसे–चक्री, अर्द्धचक्री इत्यादि इस नृत्य की विशेषता है। ठुमरी या भजन पर नर्त्तक भाव-अभिव्यक्ति करते हैं।

कथक नृत्य की वेशभूषा पर मुगल काल का प्रभाव अधिक है। वर्त्तमान समय में नर्त्तक चूड़ीदार पैजामा कुरता या अंगरखा पहनते हैं। स्त्रियों की वेशभूषा लहंगा-दुपट्टा या मुगल अंदाज में कुरती और चुड़ीदार होती है। वेश सज्जा और आभूषण भी परिधान के अनुरूप ही होता है।

इस प्रकार कथक नृत्य सम्पूर्ण उत्तर भारत का प्रतिनिधि शास्त्रीय नृत्य है। भारतीय इतिहास में समय-समय पर राजनीतिक सामाजिक बदलाव के कारण सांस्कृतिक परिवेश में भी बदलाव हुआ और इसका असर नृत्यकला पर भी पड़ा। आधुनिक समय में कथक में भी नित्य नए प्रयोग हो रहे हैं। पं० बिरजू महाराज, सितारा देवी आदि प्रसिद्ध कथक नृत्यकार हैं। उमा शर्मा, शोभना नारायण, शर्मिला मुखर्जी, डॉ. नगेन्द्र 'मोहिनी', शिवजी मिश्र, नीलम चौधरी आदि वर्तमान के प्रसिद्ध कथक नृत्यकार हैं।

तुम्हें यह जानकर अचरज होगा कि पूर्वांचल में पुंग नामक वाद्ययंत्र को उत्तरांचल में ढोलक कहते हैं। फर्क इतना है कि पुंग मिट्टी का बना होता है तथा ढोलक लकड़ी का बना होता है।

रस-भाव के मानसिक अनुभूति को रस कहते हैं-रस 9 प्रकार के होते हैं। (1) श्रृंगार (2) वीर (3) करूण (4) रौद्र (5) हास्य (6) भयानक (7) विभत्स (8) अद्भुत (9) शांत

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओडिसी नृत्य का इतिहास

प्राचीन काल में उत्कल प्रदेश जिसे वर्तमान में उड़िसा कहते हैं । यहाँ जगन्नाथ मंदिर है जो विश्व-प्रसिद्ध है, देवदासी और महारी नृत्य का प्रचलन मंदिरों में था । प्रातः काल भगवान की आरती के समय भगवान के सोलहों सेवा, शृंगार के समय नृत्य की प्रस्तुति की जाती थी और आज तक भी की जाती है ।

ऐसा कहा जाता है कि चैतन्य महाप्रभु का आगमन जब उत्कल में हुआ, उनके सत्कार एवं स्वागत में गोटिपुआ नृत्य की प्रस्तुति की गई थी । गोटिपुआ का शाब्दिक अर्थ इस प्रकार है, गोटि - एक और पुआ - लड़का। यह नृत्य उस समय बहुत प्रचलित था, शरीर का विशेष रूप से संचालन इस नृत्य की विशेषता थी जो आधुनिक काल में भी है । ''गोटिपुआ' नृत्य की शुरुआत ''राय रामानंद देव'' ने की थी, राजा प्रताप रुद्र के कार्य काल में इस नृत्य की बहुत ख्याति हुई । इसका प्रचलन चरम सीमा पर हुआ। मंदिर में झूलन यात्रा, चन्दन यात्रा और रथ यात्रा इत्यादि में गोटिपुआ नृत्य की प्रस्तुति की जाती थी । देवदासी किसी भी बाह्य स्थानों पर नृत्य नहीं कर सकती थीं । वे केवल मंदिर प्रागंण में ही तृत्य कर सकती थी यह आदेश था ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओडिसी नृत्य का सबसे बड़ा प्रतिष्ठान उड़िसा में उत्कल संगीत महाविद्यालय है। आज ओडिसी नृत्य अपना नवीन रूप लेकर आया है भाव भंगिमा शरीर का परिचालन लगभग वैसा ही है सिर्फ 'गोटिपुआ' नहीं आज स्त्रियाँ ही अपने रूप में तथा पुरुष नर्तक अपने वास्तविक रूप में नृत्य करते हैं।

ओडिसी नृत्य की विशेषता है कि इसमें लास्य बहुत अधिक है, भाव बहुत है, त्रिभंग और चौक मुद्रा इसकी प्रमुखता है। शरीर को तीन स्थानों से मोड़ कर खड़े होते हैं–प्रथम–घुटने को थोड़ा झुकाकर

द्वितीय–कमर को बाईं ओर कर खड़े होते हैं।

तृतीय–गर्दन भी बाईं ओर झुकी होती है।

चौक में पैर फैला कर घुटने को थोड़ा मोड़ कर हाथ को 90° के कोण में फैला कर खड़े होते हैं। नर्तकी मंच पर एक बार नृत्य प्रारंभ करती है तो बीच में कहीं दम लेने की गुंजाइश नहीं होती। एक विभाग (आईटम) समाप्त कर के ही क्षणिक रुक सकती है। पूरे नृत्य में घुटना आधा मुड़ा होता है सीधे खड़े होकर नहीं बल्कि थोड़ा बैठ कर ही नृत्य किया जाता है। वेश भूषा–नृत्य का पोशाक है सम्बलपुरी साड़ी जिसे धोती की तरह बाँधी जाती है (वर्त्तमान में बना) बनाया पोशाक आता है।

जेवर–चाँदी का विशेष बनावट का जेवर पहना जाता है। माथे पर टीका तथा टायरा, कान में पूरा कान ढका और झुमका गले में सटा हार जिसे चिक भी कहते हैं। फिर एक लम्बा हार, बाजुबन्द हाथ में बाला, अँगूठी तथा कमरधनी जिसे 'बेगं पट्टिया' कहते हैं। इसकी बनावट बहुत विशेष रूप की होती है। यह करीब एक बित्ता चौड़ा होता है तथा लाल डोरी लगी होती है जिससे यह बाँधा जाता है। पाँव में (चौमुहाँ) घुँघरू बँधे होते हैं। बालों में जूड़ा बनाया जाता है जूड़े में शोले का फूल (शोला पानी में

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पाया जाता है जिससे बड़ी सुंदर आकृति के फूल बनते हैं) का गजरा लगाया जाता है और गजरा के ऊपर लम्बाई में फूल लगाया जाता है, मुख की सुन्दरता में बिन्दी की महत्ता बहुत अधिक है, आँखों की सजावट भी सुंदर तरीके से की जाती है। इसी प्रकार पुरुष नर्तक एक सुन्दर धोती पहनते हैं। शरीर पर केवल एक अंगवस्त्रम जिसे अंगरखा भी कहते हैं रखते हैं, कमर पेटी लगाते हैं, गहना पहनते हैं, बाल में कुछ नहीं किया जाता, पाँव में घुँघरू पहनते हैं। ओडिसी नृत्य में वाद्य यंत्रों में पखावज, हारमोनियम, बाँसुरी, मंजीरा तथा वायलिन का उपयोग होता है।

प्रत्येक शास्त्रीयनृत्य में भाग या आइटम होते हैं उसी प्रकार ओडिसी के भी भाग हैं जो इस क्रम में होते हैं–

(1) मंगला चरण (2) बटु (स्थाई)

(3) पल्लवी (4) अभिनय

(5) मोक्ष

इस नृत्य शैली के प्रमुख गुरु एवं नृत्यकार हैं–पंकज चरण दास, केलूचरण महापात्र, देवप्रसाद दास, मायाधर राउत, संयुक्ता पाणिग्रही गोविन्द चंद्र पाल, सोनल मानसिंह, माधवी मुद्गल, कुमकुम महंती, मिनती मिश्रा, तमाल पात्रा, शेरोन लावेन, सविता मिश्रा, सोनाली महापात्र नन्दी इत्यादि।

भरत मुनी द्वारा रचित नाट्य शास्त्र नामक ग्रन्थ में शास्त्रीय नृत्यों का पूर्ण व्याकरण निहित है।

'गीत गोविन्द' गुरु जयदेव द्वारा रचित संस्कृत भाषा में एक दीर्घ काव्य है। इसमें श्रीकृष्ण का भाँति-भाँति से वर्णन है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मणिपुरी नृत्य (मणिपुर)

मणिपुर की सम्पूर्ण धरती, मानो नृत्य करती सी लगती है। ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से घिरा हुआ आंगन जैसा यह प्रदेश प्रकृति की रंगशाला का मंच ही लगता है। वहाँ के निवासियों के अनुसार भी, मणिपुर की स्थापना ही इसलिए हुई थी कि स्वर्ग के देवता वहाँ पर अपना नृत्य कर सकें। इस संबंध में एक विचित्र लोक कथा प्रचलित है कि एक बार महारास में कृष्ण के साथ गोपियाँ नृत्य कर रही थी। नटराज शिव ने उस नृत्य को देखने की अनुमति मांगी। तब कृष्ण ने केवल इतनी अनुमति दी कि वे रासलीला की ओर पीठ कर के खड़े हो सकते हैं और मात्र सुन सकते हैं। शिव ने वैसा ही किया। किन्तु महारास की नृत्यलीला, घुंघरू, पुंग और बांसुरी की सम्मिलित ध्वनियों का उन पर कुछ ऐसा जादू हुआ कि वे अपना वचन भूल गये। शिवजी ने हिमालय लौटकर तत्काल ही पार्वती के साथ रास रचाने का निश्चय किया और उसके लिए इसी मणिपुर का स्थान चुना। उसी क्षण उन्होंने 'पेंगा' और पेना आविष्कृत किया, जो इस नृत्य के साथ बजाए जाते हैं। शेषनाग की मणि से सारा प्रदेश आलोकित हो उठा, इसी कारण इसे मणिपुरी कहा जाने लगा।

मूल रूप से अपने देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए ही मणिपुर निवासी आजतक नृत्य करते चले आ रहे हैं। उनका प्राचीनतम् नृत्य 'लाई-हरोबा' है, जो शिव पार्वती द्वारा सर्वप्रथम किया गया था। देवताओं की प्रसन्नता के लिए 'लाई-हरोबा' नृत्य वर्ष में एक बार नई फसल रोपने के समय अप्रैल-मई के आस-पास किया जाता है। वैसे यह एक चिरन्तम नृत्य है, जो अन्य अवसरों पर भी प्रदर्शित होता रहता है। लाई-हरोबा नृत्य वस्तुतः ग्राम देवता को समर्पित रहता है। ये देवता 'उमेड्-लाई' कहलाता है, जो मणिपुर के आदि देवताओं में से है।

पुजारी 'मैबा' और पुजारिणी मैबी कहलाती है। मणिपुरी नृत्य के विकास में इनका बहुत बड़ा हाथ रहा है। 'लाई-हरोबा' बहुत सीमा तक एक धार्मिक क्रिया है जिसमे नृत्य-तत्वों की प्रधानता रहती है, जो दर्शकों को बांधे रखते हैं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

15वीं शताब्दी के आसपास मणिपुर क्षेत्र में वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ। उसी के साथ रास लीला तथा रास नृत्य ने नए रूपों में मणिपुर की धरती पर प्रवेश किया। आज भी धार्मिक पर्वों पर कीर्तन का विशेष आयोजन किया जाता है। इन कीर्तनों में मंजीरे, करताल और ढोल का प्रमुख रूप से उपयोग किया जाता है। अर्द्धवृताकार मण्डलों में घूम-घूमकर ये नृत्य कीर्तन करते हैं। नर्तकों के चंदन-चर्चित माथे श्वेत पगड़ियों से सुशोभित रहते हैं। धोती, उतरीय और पगड़ी उनकी वेशभूषा है। अपने वाद्‌यंत्रों को बजाते हुए ये कीर्तनकार जिस प्रकार नृत्य करते हैं वह एक अद्‌भुत रस की सृष्टि करता है। करताल चलन, पुङ्‌चलन आदि इस नृत्य के प्रभावशाली अंश है। चलन-घटन के नाम से प्रसिद्ध ये नृत्य वैष्णव संस्कृति की अपूर्व देन है। इसी परंम्परा में एक विशेषकीर्तन नृत्य 'रासेश्वर' के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह मणिपुर के राजपरिवारों में प्रचलित है। विशेष रूप से उस परिवार के सदस्यों के मृत्यु के अवसर पर यह कीर्तन होता है। इसमें विलाप और करुणा की भावना अपेक्षाकृत परिलक्षित होती है।

मणिपुर का सबसे प्रधान व लोकमान्य नृत्य 'रासलीला' है। यह रासलीला नृत्य, भारतीय 'ओपेरा' का अपूर्व उदाहरण है। इसमें संवाद अभिनय आदि है। किन्तु नृत्य की प्रमुखता रहती है, रासलीला होता है। कृष्ण का अभिनय 10-12 वर्ष का आयु तक कोई बालक ही कर सकता है। किन्तु राधा व उनकी सखियों का अभिनय प्रवीण नर्तकियां ही करती हैं। रासलीला चार प्रकार की होती है-

1. वसन्तरास 2. कुंज रास
3. महारास 4. नित्यरास

''वसंत' रास वैसाख मास में आयोजित होता है, जिसमे रूठी हुई राधा को कृष्ण द्वारा मनवाने की पूर्ण प्रयास है। कृष्ण राधा के सम्मुख आत्म समर्पण करते हैं, और राधा उन्हें क्षमाकर पुण: स्वीकार कर लेती है। कुंजरास आश्विनमास में होता है। यह राधा और कृष्ण के संयोग शृंगार का नृत्य है। इनमें उनका विरह नहीं है। कुंजों में राधा और कृष्ण का विभिन्न रूपों में विहार प्रदर्शित करना इस रासनृत्य की अपनी विशेषता है। 'महारास' कार्तिक मास में होता है। इस नृत्य में राधा और कृष्ण का विरह है। राधा को त्यागकर कृष्ण चले जाते हैं और अंत में पुण: कृष्ण की प्राप्ति हो जाती है। 'नित्य रास' किसी भी समय किया जा सकता है। यह राधा और कृष्ण के सतत् विरह और मिलन को प्रदर्शित करता है। आत्मा और परमात्मा का विछोह तथा आत्मा द्वारा उस परम तत्व को पाने का प्रयत्न एवं उसी में समर्पित हो जाने की भावना इन सभी लीलाओं की मूल प्रेरणा रही है।

रासलीला नृत्य की नर्तकों कि वेशभूषा बहुमूल्य है, जिसे देखकर मन ठगा सा रह जाता है। कहा जाता है कि मणिपुर के महाराज जयसिंह, जो मणिपुर रासलीला के जनक माने जाते हैं, इस वेशभूषा के भी आविष्कर्ता है। रासलीला की नर्तकियाँ राधा व गोपियाँ एक गोल घुमावदार लहंगा पहनती है। यह लहंगा प्राय: लाल या हरा रंग का होता है। नीचे दक्तीया बेंत की छड़िया लगाकर लहंगों को एक दिशा में ही घुमने के लिए सेट कर दिया जाता है। लहंगे के ऊपर एक छोटी-सी घघरीया रहती है। जो लहंगे को आधी दूर तक ढक लेती है। इन लहंगों और घघरियों में अबरक के छोटे-छोटे असंख्य टुकड़े लगे रहते हैं जो प्रकाश में जगमगाने लगते हैं। छोटी और कसी हुई चोली भी इसी प्रकार मचकीले रंगों और गोटे-जरी के काम से चमकते रहती है। इन सब पर एक महीन ओढ़नी लटकी रहती है, जो नर्तकी का मुख भी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ढके रखती है, किन्तु पारदर्शी होने के कारण उसके मुख का हर भाव दिखाई पड़ती है। विविध प्रकार के लेपों और चंदनों से उसका मुख रंगीन रहता है। केश सज्जा भी शृंगार आदि विभिन्न प्रकार के रसों में अलग-अलग प्रकार से बनाई जाती है। वसंत रास में जूड़ा पीछे की तरफ, महारास में सिर के मध्य में तथा कुंज रास में बाईं तरफ बनाई जाती है। कृष्ण का वेशभूषा मोर-मुकुट युक्त पिताम्बरधारी, मुरली, वैजयन्ती माल सहित ही दिखाई जाती है।

मणिपुर की धरती ही नृत्यमय है। वहां उपरोक्त नृत्यों के अतिरिक्त एक 'लघुरास' भी होता है। जिसमें गोपियाँ कृष्ण के साथ रास रचाकर अपना प्रेम निवेदन करती है। चैतन्य महाप्रभु की जीवन लीला पर आधारित 'गौरलीला' होती है। कार्तिक मास में गोष्ठ लीला बड़े धुम-धाम से मनायी जाती है। कालियादमन' की लीला भी प्राय: देखने को मिलती है। दशहरे के दिनों में नटों के अलावा वहां 'तबला-धांगबी' आदि बहुत से लोकनृत्य भी है। गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर ने मणिपूर नृत्य को परिमार्जित कर उसे लोकप्रिय बनाने की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किया है। इन दिनों हमारी राष्ट्रीय सरकार द्वारा वहाँ मणिपुरी नृत्य अकादमी की भी स्थापना की गई है जहां इस नृत्य शैली की परम्परागत शिक्षा की समुचित व्यवस्था है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2

परिभाषा

■ कथक :

लय–समय की एक-सी चाल अथवा गति को लय कहते हैं । गायन, वादन एवं नृत्य की रफ्तार अथवा दो क्रियाओं के बीच के समान अन्तराल को लय कहते हैं । लय संगीत की आधारशिला है । इसके बिना संगीत का कोई अस्तित्व ही नहीं है ।

लय के प्रकार–शास्त्रों में लय के तीन भेद माने गए हैं । (1) विलम्बित लय (2) मध्य लय (3) द्रुत लय ।

विलम्बित लय–साधारण से धीमी गति को विलम्बित लय कहते हैं । संगीत की भाषा में इसे ठाह लय कहते हैं । कथक नृत्य में इस लय में आमद, सलामी इत्यादि नाचे जाते हैं ।

मध्य लय–लय न अधिक धीमी हो और न ही अधिक तेज हो तो उस लय को मध्य लय कहते हैं । इस लय में कथक नृत्य में तोड़े, टुकड़े परण इत्यादि नाचे जाते हैं।

द्रुत लय–मध्य लय से दुगनी तेज लय को द्रुत लय कहते हैं । इसकी रफ्तार तेज होती है । नृत्य में इस लय में पैरों की तैयारी ततकार, फरमाइशी टुकड़े इत्यादि नाचे जाते हैं ।

परण–नृत्य का ऐसा बोल जिसमें तबले या पखावज के जोरदार बोलों का समावेश होता है, परण कहलाता है । यह एक से अधिक आवृत्ति के बोल समूह का होता है।

मात्रा–संगीत में समय नापने के पैमाने या इकाई को मात्रा कहते हैं । मात्राओं के मेल से ताल का निर्माण होता है ।

आवर्त्तन–जब कोई ताल या बोल अपनी पहली मात्रा से प्रारम्भ होकर पूरी बजकर या नाचकर फिर से पहली मात्रा या सम पर आए तो उसे उस ताल या बोल की एक आवृत्ति या आवर्तन कहते हैं । दूसरे शब्दों में, किसी ताल की पूरी मात्रा या उसके बोल को एक आवृत्ति कहते हैं ।

मुद्रा–भावों को प्रकट करने के लिए शरीर के अंगों की विशिष्ट स्थिति, जो भावपरक हो, मुद्रा कहलाती है । इसे नृत्य की भाषा कहते हैं । नृत्य में हस्त-मुद्राओं का बड़ा ही महत्त्व है । हाथों के संकेत से नृत्यकार भावों की अभिव्यक्ति करता है । हाथ-संचालन की दृष्टि से मुद्रा दो प्रकार की होती है–(1) संयुक्त

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मुद्रा (2) असंयुक्त मुद्रा । दोनों हाथों के संयोग से जो मुद्रा बनती है उसे संयुक्त मुद्रा कहते हैं जैसे–शंख, कपोत, इत्यादि । एक हाथ से जो मुद्रा या स्थिति बनती है उसे असंयुक्त मुद्रा कहते हैं । जैसे –पताका, त्रिपताका, अर्धचन्द्र, सूचीमुख इत्यादि ।

हस्तक–हाथों द्वारा बनाई गई स्थिति या मुद्रा को हस्तक कहते हैं । इसे हस्तमुद्रा भी कहा जाता है । कथक नृत्य में थाट की स्थिति में हस्तक का विशेष महत्त्व है ।

तांडव–रौद्र रस प्रधान नृत्य तांडव कहलाता है । अर्थात् जिस नृत्य में वीर एवं रौद्र रस का प्रदर्शन होता है वह तांडव नृत्य कहलाता है । एक पौराणिक कथा के अनुसार त्रिपुरासुर राक्षस का वध करने के लिए भगवान शंकर ने वीर और रौद्र रस प्रधान जो नृत्य किया उसे तांडव नृत्य कहते हैं । इस नृत्य के प्रवर्त्तक भगवान शंकर को माना गया है । यह नृत्य पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त होता है । अंगों की चपलता, वीर, क्रोध तथा रौद्र भावों को प्रदर्शित करने के लिए यह बहुत उपयुक्त नृत्य शैली है । तांडव नृत्य में विश्व की पाँच प्रक्रियाएँ–सृष्टि, स्थिति, तिरोभाव, आविर्भाव और संहार दिखाई जाती है । तांडव के मुख्य सात भेद हैं –

(1) संहार तांडव (2) त्रिपुर तांडव

(3) कालिका तांडव (4) संध्या तांडव

(5) गौरी तांडव (6) उमा तांडव

(7) आनन्द तांडव ।

लास्य–भावों की अभिव्यक्ति के लिए शृंगार रस प्रधान नृत्य लास्य नृत्य कहलाता है । एक कथा के अनुसार त्रिपुरासुर राक्षस का वध करने के पश्चात् उसके हर्ष में पार्वती ने जो शृंगार रस प्रधान नृत्य किया उसे लास्य नृत्य कहते हैं । स्त्री कोमलता और शृंगार की प्रतीक मानी जाती है । अतः लास्य नृत्य शृंगारिक और कोमलता प्रधान नृत्य है । वैसे तो पुरुष और स्त्री दोनों ही इस नृत्य को कर सकते हैं परन्तु यह स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त है क्योंकि इसमें ऐसे अंगहारों का प्रदर्शन होता है जो स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त है ।

इसके तीन प्रकार हैं –(1) विकट लास्य (2) विषम लास्य (3) लघु लास्य ।

प्रश्न

1. लय की परिभाषा लिखें ।
2. शास्त्रों में लय के कितने प्रकार माने गए हैं ?
3. मुद्रा की व्याख्या करते हुए इसके भेदों को लिखें ।
4. 'तांडव' एवं 'लास्य' का तुलनात्मक वर्णन करें ।
5. कथक में किस प्रकार के बोलों को 'परण' कहते हैं ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भरतनाट्यम

अलारिपु–इस शब्द का अर्थ विकसित या प्रस्फूटित होना है । भरतनाट्यम का यह पहला आइटम होता है । पैरों को सटाकर समपाद की मुद्रा में नमस्कार करने के पश्चात् ही नृत्त प्रारंभ होता है । इस प्रारम्भिक कार्यक्रम में ग्रीवा, नेत्र और भौं के विभिन्न रूपों से परिचालन होता है जिसे रेचक कहते हैं । नर्तकी गति का संकेत करती है । अलारिपु की विशेषता यह है कि इसमें शरीर के दोनों भागों का संचालन एक समान होता है । अर्थात जैसा, दाहिना अंग करता है ठीक वैसी ही स्थितियाँ बायें अंग से प्रस्तुत की जाती है ।

जतिस्वरम–अलारिपु के पश्चात् जतिस्वरम् प्रस्तुत किया जाता है । इसमें ताल के विभिन्न करताव दिखाए जाते हैं । नर्तकी कमर पर हाथ रखकर पैरों के सीधे परिचालन से ताल दिखाती है । उसके बाद वह जाति का काम उठाती है । मृदंगमवादक व नर्तकी क्रमशः सोल्लुकट्टू और चोल्लु का काम दिखाते हैं । **मृदंग** से बजने वाले बोल चोल्लु कहलाते हैं तथा पद संचालन से निकलने वाली घुंघरू की ध्वनि सोलकट्टू कही जाती है ।

ध्वनि–जो कुछ हम सुनते हैं उसे ध्वनि कहते हैं । टक्कर से भी जो आवाज आती है या उत्पन्न होती है वह ध्वनि ही कहलाती है । कुछ ध्वनियाँ कर्णप्रिय होती है तथा कुछ कर्णकटु होती हैं । संगीत के मधुर ध्वनि को नाद कहते हैं ।

कम्पन–सुरपेटी और वीणा के खिंचे हुए तार को स्पर्श करने अथवा छेड़ने से तार के ऊपर–नीचे जाने को कम्पन कहते हैं । इससे ध्वनि उत्पन्न होती है । तार को आघात करने पर तार पहले ऊपर जाकर अपने स्थान पर आता है और फिर नीचे जाकर अपने स्थान पर आता है । इस प्रकार एक कम्पन पूरा होता है । जब तक तार पर छेड़ने का प्रभाव रहता है तब तक तार कम्पित होता रहता है और ध्वनि उत्पन्न होती रहती है । जैसे–जैसे तार पर छेड़ने का प्रभाव कम होता है, ध्वनि कम होती जाती है । एक सेकेण्ड में तार कितनी बार कम्पित होता है उसकी कम्पन संख्या उतनी ही मानी जाती है । वैज्ञानिकों ने कम्पन संख्या को नापने का प्रयत्न किया है और वे इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जैसे–जैसे हम स्वर से ऊपर बढ़ते जाते हैं स्वरों की कम्पन संख्या प्रति सेकेन्ड बढ़ती जाती हैं और जैसे–जैसे सा से नीचे की ओर चलते हैं स्वरों की कम्पन संख्या कम होती जाती है । कम्पन के मुख्य दो प्रकार हैं

(1) नियमित और अनियमित कम्पन

(2) स्थिर और अस्थिर कम्पन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रश्न

1. भरतनाट्यम का प्रथम कार्यक्रम को क्या कहते है, इसका वर्णन करें ।
2. जातिस्वरम् से क्या समझते हैं ? सोल्लुकट्टु तथा चोल्लु शब्द से क्या समझती हैं ?
3. ध्वनि एवं कम्पन से क्या समझती है ? ध्वनि एवं कम्पन का तुलनात्मक विवेचना करें ।
4. कम्पन के कितने प्रकार है, नाम लिखें ।

❑

पद्मश्री हरि उप्पल के विषय में बिहार के कला से जुड़े प्रत्येक बच्चों को जानना आवश्यक है। हरि उप्पल जी को बचपन से ही नृत्य सीखने की प्रबल इच्छा थी। इन्होंने अपने युवावस्था में मणिपुर जाकर मणिपुरी नृत्य की शिक्षा ली फिर ये कला मंडलम जाकर कथाकली नृत्य की विधिवत शिक्षा ली। तत्पश्चात बिहार की लड़कियों के लिए इन्होंने 50 के दशक में भारतीय नृत्य कला मन्दिर की स्थापना की जहाँ पर सभी शास्त्रीय नृत्यों की विधिवत शिक्षा दी जाती है। 2011 जनवरी में पदमश्री हरि उप्पल जी का देहावसान हुआ।

विश्व नृत्य दिवस - 29 अप्रैल को पूरे विश्व में मनाया जाता है।

विश्व संगीत दिवस - 21 जून को पूरे विश्व में मनाया जाता है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओडिसी (पारिभाषिक शब्द)

ताल—त्रिपद् एवं खेमटा।

भाव—मुद्रा एवं अभिनय।

ताल—ताल एक ऐसा शब्द है जिसके बिना सृष्टि भी नहीं चल सकती है। बेताल होने पर ही पृथ्वी पर भी भूचाल आता है। सड़क पर भी दुर्घटनाएँ बेताल होते ही होती है।

यहाँ पर ओडिसी नृत्य की चर्चा हो रही है। इस नृत्य में दक्षिण भारतीय तालपद्धति का पालन होता है। इस नृत्य में विभिन्न प्रकारों के ताल का प्रयोग होता है, इसके लिए एक श्लोक है—

ध्रुवमठ रूपकस्य झम्पा त्रिपटएवच।

अटताल एकतालस्य सप्तताल प्रकृतित:॥

1.	ध्रुवताल	—	मात्रा	14
2	मठताल	—	,,	10
3.	रूपक	—	,,	6
4.	झम्पा	—	,,	5
5.	अटताल	—	,,	12
6.	एकताल	—	,,	4
7.	त्रिपट	—	,,	7

इस पाठ में दो तालों का वर्णन किया गया है, त्रिपट एवं खेमटा। त्रिपट ताल को हिन्दुस्तानी संगीत में रूपक भी कहते हैं।

ताल		त्रिपट
मात्रा	—	7
जाति	—	तिस्र
भाग	—	3
अंग	—	। लघु । द्रुत । द्रुत
चिह्न	—	1 0 0
छंद	—	3 + 2 + 2 = 7
ताली	—	1 पर 4 पर 6 पर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उकुट (बोल) एक गुण– 1 2 3 4 5 6 7

धेई तथि दांक तथि दांक | तथि दाक

ताल-खेमटा– खेमटा ओडिसी नृत्य में बहुत प्रमुख ताल है। इसे झूला ताल भी कहते हैं। यह 6 मात्रा का होता है।

ताल खेमटा–	मात्रा	– 6
	जाति	– त्रिश्र
	भाग	– 2
	आं	– 2
	चिह्न	– | |
	छंद	– 3 + 3 = 6
	ताली	– 1 पर 4 पर

उकुट (बोल)– धा आ तिन | ताक धा तिन

अभिनय

ओडिसी नृत्य में अभिनय का महत्त्व बहुत अधिक है। ओडिसी नृत्य भावना और अभिनय प्रधान नृत्य है।

(ओडिसी नृत्य में भाव पूर्ण मुद्रा में एक नर्त्तकी)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मन की भावना को मुख और हस्त द्वारा दर्शकों के समक्ष अभिव्यक्त करना ही अभिनय कहलाता है –

अभिनय चार प्रकार के हैं –

(1) आंगिक (2) वाचिक (3) आहार्य (4) सात्विक

आंगिक–अंग, प्रत्यंग तथा उपांग द्वारा जिस अभिनय की अभिव्यक्ति होती है या की जाती है उसे आंगिक कहते हैं, जैसे–अंग, सिर, कर, वक्ष, पार्श्व, कटिप्रदेश, पद तथा ग्रीवा ।

वाचिक–जो अभिनय वचन द्वारा किया जाता है । जैसे काव्य, नाटक, कथा आदि को वचन द्वारा प्रकाशित करने को वाचिक अभिनय कहते हैं ।

आहार्य–वस्त्र, अलंकार, और साज–सज्जा को आहार्य कहते हैं । विभिन्न रंगों के वस्त्र, परिधान एवं सुदंर गहनों के द्वारा विभूषित होकर जब कोई नर्त्तकी अभिनय करती है तो उसे आहार्य कहते हैं ।

सात्विक–अपने मन की भावना को भाव रस द्वारा अभिव्यक्त करने को सात्विक अभिनय कहा जाता है । यह मनोवृत्ति द्वारा स्वत: निर्गत होता है । सात्विक अभिनय के निम्नलिखित 8 गुण हैं–स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, वैपश्य, वैवर्ण, अश्रु एवं प्रलय ।

भाव

भाव शब्द का बहुत ही वृहद अर्थ है परन्तु यहाँ पर हम शास्त्रीय नृत्य के अन्तर्गत भाव के विषय में चर्चा करेंगे। जिस प्रकार हिन्दी और अंग्रेजी या भाषा के व्याकरण में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता ठीक उसी प्रकार भाव हो या अभिनय ये सभी शास्त्रीय नृत्य में लगभग सामान्य ही होते हैं–

मनुष्य के हृदयगत चिंता या विचारों को जब हम चेहरे तथा अंगों के द्वारा प्रदर्शित करते हैं तो उसे भाव कहते हैं–ये 5 (पाँच) प्रकार के होते हैं–

(1) स्थायी भाव (2) विभाव

(3) अनुभाव (4) संचारी भाव

(5) व्याभिचारी

(1) **स्थाई भाव**–के कारण जिस आनंद की प्राप्ति होती है उसे स्वाद या रस कहा जाता है– यह 9 प्रकार के होते हैं –

(1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) भय (6) विभत्स (7) विस्मय (8) उत्साह (9) शांत

विभाव–विभाव नृत्य नाट्य और काव्य की रचना में सहायता करते हैं । ये भी रस सृष्टि के कारण

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

है । इसके दो भाग हैं—

(1) आलम्बन (2) उद्दीपन ।

(3) **अनुभाव**—स्थाई भाव या संचारी भाव को प्रत्यंग द्वारा व्यक्त करना ही अनुभाव कहलाता है । जैसे—हाथ ऊपर उठाना, तिरछी नजर से देखना ।

(4) **संचारी भाव**—स्थायी भाव के साथ अन्य मनोविकार जैसे छोटे-छोटे भाव जो उत्पन्न होते हैं एवं पुनः विलीन हो जाते हैं संचारी भाव कहलाते हैं। यदि हम स्थाई भाव की तुलना समुद्र से करेंगे तो संचारी भाव की तुलना समुद्र के लहर से की जा सकती है ।

(5) व्याभिचारी—स्थायी भाव प्रकार के छोटे-छोटे भाव जो समान्य नहीं होते तो फिर अपवाद ही होते हैं, व्याभिचारी कहलाते हैं। इस प्रकार हमने भाव की परिभाषा पढ़ी ।

हस्त मुद्रा

अभिनय दर्पण के अनुसार हस्त मुद्रा तीन प्रकार के होते हैं—

(1) असंयुक्त हस्त मुद्रा — 28 प्रकार

(2) संयुक्त हस्त मुद्रा — 23 प्रकार

(3) नृत्य हस्त मुद्रा — 13 प्रकार

प्रतिदिन के जीवन में हम जितना भी कार्य करते हैं उसमें हाथ का प्रयोग तो अवश्य ही होता है परन्तु वह सभी एक मुद्रा होती है जिसका नाम भी है यह जान कर आपको आश्चर्य होगा। किन्तु शास्त्रीय नृत्य में हम एक हाथ से या दोनों हाथों से जो भी कार्य करते हैं उसका एक नाम है जिसे सचित्र दिया जा रहा है—

असंयुक्त हस्तमुद्रा प्रकार 28

(1) पताका	(2) त्रिपताका	(3) अर्धपताका
(4) कर्त्तरीमुख	(5) मयूर	(6) अर्धचन्द्र
(7) अराल	(8) शुकतुण्ड	(9) मुष्टी
(10) शिखर	(11) कपित्थ	(12) कटकामुख
(13) सूची	(14) चन्द्रकला	(15) पद्मकोश
(16) सर्पशीर्ष	(17) मृगशीर्ष	(18) सिंहमुख
(19) कांगुल	(20) अलपद्म	(21) चतुर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(22) भ्रमर (23) हस्सास्य (24) हंसपक्ष

(25) संदेश (26) मुकुल (27) ताम्रचूड़

(28) त्रिशूल

प्रश्न

1. ताल श्लोक स्मरण करके लिखें।
2. विभिन्न तालों की मात्रा के विषय में लिखें।
3. ताल त्रिपट और खेमटा का पूर्ण वर्णन करें।
4. अभिनय किसे कहते हैं तथा इसके प्रकार लिखें।
5. भाव की परिभाषा एवं प्रकार लिखें।
6. संयुक्त हस्त मुद्रा तथा असंयुक्त हस्त मुद्रा कण्ठस्थ करें तथा लिखें।

❑

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मणिपुरी नृत्य (पारिभाषित शब्द)

लास्य–नृत्य का वह रूप जिसमें ललित अंगहार ललित लय, कौशिकी वृत्ति तथा गति का प्रयोग होता है, लास्य कहलाता है। ताल, वाद्य, नृत्य तथा अभिनय के क्रम में किया जानेवाला कोमल प्रयोग लास्य कहलाता है। लास्य कोमलता और शृंगारिकता का प्रतीक है। इसमें ऐसे अंगहारों का प्रयोग किया जाता है जो स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त होता है। लास्य से रस और भाव की उत्पत्ति होती है। लास्य शृंगार रस से परिपूर्ण लज्जा एवं विनम्रता का परिचायक होता है। इस नृत्य में पदगति या पदसंचालन अत्यंत कोमल रूप से होता है।

हस्त–हाथों के संकेत से जो मुद्रा बनती है या उसके द्वारा भाव का प्रदर्शन किया जाता है उसे हस्त या हस्तक कहते हैं। नृत्य में भावों को प्रदर्शित करने के लिए कभी एक हाथ तथा कभी दोनों हाथों का प्रयोग किया जाता है। एक हाथ से जो मुद्राएँ बनती हैं उसे एक हस्तमुद्रा तथा दोनों हाथों से जो मुद्राएँ बनती हैं उसे संयुक्त हस्त मुद्रा कहते हैं। अभिनय दर्पण के अनुसार असंयुक्त या एक हस्त मुद्रा 28 प्रकार के हैं तथा संयुक्त हस्त मुद्रा 23 प्रकार के होते हैं, किन्तु मणिपुरी नृत्य में केवल गोविन्द संगति लीला केवल 8 प्रकार के ही असंयुक्त मुद्रा तथा 4 प्रकार के संयुक्त हस्तमुद्रा को प्रयोग में लाया जाता असंयुक्त हस्त है। उनके नाम इस प्रकार है–(1) पताक हस्त, (2) त्रिपताक हस्त, (3) अर्ध पताक हस्त, (4) कपित्थ हस्त, (5) मुष्ठीहस्त, (6) अर्धचन्द्र हस्त, (7) मृगशिर हस्त, (8) हस्यास्य हस्त।

संयुक्त हस्तमुद्रा–(1) अंजलि हस्त, (2) कर्कटम् हस्त, (3) चक्रहस्त, (4) सम्पुट हस्त।

मन की भावना को मुख और हस्त द्वारा दर्शकों के समक्ष अभिव्यक्त करना ही अभिनय कहलाता है – अभिनय चार प्रकार के हैं–

(1) आंगिक (2) वाचिक (3) आहार्य (4) सात्विक

आंगिक–अंग, प्रत्यंग तथा उपांग द्वारा जिस अभिनय की अभिव्यक्ति होती है या की जाती है उसे आंगिक कहते हैं, जैसे–अंग, सिर, कर, वक्ष, पार्श्व, कटिप्रदेश, पद तथा ग्रीवा ।

वाचिक–जो अभिनय वचन द्वारा किया जाता है । जैसे काव्य, नाटक, कथा आदि को वचन द्वारा प्रकाशित करने को वाचिक अभिनय कहते हैं ।

आहार्य–वस्त्र, अलंकार, और साज-सज्जा को आहार्य कहते है । विभिन्न रंगों के वस्त्र, परिधान एवं सुदंर गहनों के द्वारा विभूषित होकर जब कोई नर्त्तकी अभिनय करती है तो उसे आहार्य कहते हैं ।

सात्विक–अपने मन की भावना को भाव रस द्वारा अभिव्यक्त करने को सात्विक अभिनय कहा जाता है । यह मनोवृत्ति द्वारा स्वत: निर्गत होता है । सात्विक अभिनय के निम्नलिखित 8 गुण हैं–स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, वैपथ्य, वैवर्ण, अश्रु एवं प्रलय ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भाव

भाव शब्द का बहुत ही वृहद अर्थ है परन्तु यहाँ पर हम शास्त्रीय नृत्य के अन्तर्गत भाव के विषय में चर्चा करेंगे। जिस प्रकार हिन्दी और अंग्रेजी या भाषा में व्याकरण में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता ठीक उसी प्रकार भाव हो या अभिनय ये सभी शास्त्रीय नृत्य में लगभग सामान्य ही होते हैं–

मनुष्य के हृदयगत चिंता या विचारों को जब हम चेहरे तथा अंगों के द्वारा प्रदर्शित करते हैं तो उसे भाव कहते हैं–ये 5 (पाँच) प्रकार के होते हैं–

(1) स्थायी भाव (2) विभाव

(3) अनुभाव (4) संचारी भाव

(5) व्याभिचारी

(1) **स्थायी भाव**–के कारण जिस आनंद की प्राप्ति होती है उसे स्वाद या रस कहा जाता है–यह 9 प्रकार के होते हैं –

(1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) भय (6) विभत्स (7) विस्मय (8) उत्साह

(9) शांत

विभाव–विभाव नृत्य नाट्य और काव्य की रचना में सहायता करते हैं । ये भी रस सृष्टि के कारण है। इसके दो भाग हैं –

(1) आलम्बन (2) उद्दीपन ।

(3) **अनुभाव**–स्थायी भाव या संचारी भाव को प्रत्यंग द्वारा व्यक्त करना ही अनुभाव कहलाता है । जैसे–हाथ ऊपर उठाना, तिरछी नजर से देखना ।

(4) **संचारी भाव**–स्थायी भाव के साथ-अन्य मनोविकार जैसे छोटे-छोटे भाव जो उत्पन्न होते हैं एवं पुनः विलीन हो जाते हैं संचारी भाव कहलाते हैं। यदि हम स्थाई भाव की तुलना समुद्र से करेंगे तो संचारी भाव की तुलना समुद्र के लहर से की जा सकती है ।

(5) व्याभिचारी–स्थाई भाव प्रकार के छोटे-छोटे भाव जो सामान्य नहीं होते तो फिर अपवाद ही होते हैं व्याभिचारी कहलाते हैं। इस प्रकार हमने भाव की परिभाषा पढ़ी ।

हस्त मुद्रा

अभिनय दर्पण के अनुसार हस्त मुद्रा तीन प्रकार के होते हैं–

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(1) असंयुक्त हस्त मुद्रा –28 प्रकार

(2) संयुक्त हस्त मुद्रा –23 प्रकार

(3) नृत्य हस्त मुद्रा –13 प्रकार

प्रतिदिन के जीवन में हम जितना भी कार्य करते हैं उसमें हाथ का प्रयोग तो अवश्य ही होता है परन्तु वह सभी एक मुद्रा होती है जिसका नाम भी है यह जान कर आपको आश्चर्य होगा। किन्तु शास्त्रीय नृत्य में हम एक हाथ से या दोनों हाथों से जो भी कार्य करते हैं उसका एक नाम हैं जिसे सचित्र दिया जा रहा है–

असंयुक्त हस्तमुद्रा के 28 प्रकार के होते हैं–

(1) पताका	(2) त्रिपताका	(3) अर्धपताका
(4) कर्त्तरीमुख	(5) मयूर	(6) अर्धचन्द्र
(7) अराल	(8) शुकतुण्ड	(9) मुष्टी
(10) शिखर	(11) कपित्थ	(12) कटकामुख
(13) सूची	(14) चन्द्रकला	(15) पद्मकोश
(16) सर्पशीर्ष	(17) मृगशीर्ष	(18) सिंहमुख
(19) कांगुल	(20) अलपद्म	(21) चतुर
(22) भ्रमर	(23) हस्सास्य	(24) हंसपक्ष
(25) संदश	(26) मुकुल	(27) ताम्रचूड़
(28) त्रिशूल		

प्रश्न

1. मुद्रा के प्रकारों का सविस्तार वर्णन करें।
2. मणिपुरी नृत्य में कितने प्रकार के 'हस्त' मुद्राओं का प्रयोग होता है।
3. 'लास्य' शब्द की व्याख्या करें।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3

तालों का परिचय

तबला

तीनताल–यह मुख्यत: तबले का ताल है । इसमें 16 मात्राएँ होती है । चार–चार मात्राओं के 4 विभाग होते हैं । 1, 5, 13, पर ताली तथा 9 पर खाली होता है । कथक नृत्य एवं किसी भी संगीत क्षेत्र में यह तालों का राजा माना जाता है ।

ठेका–

धा ×	धिं	धिं	धा ।	
धा 2	धिं	धिं	धा ।	
धा 0	तिं	तिं	ता ।	
ता 3	धिं	धिं	धा ।	धा ×

झपताल–यह 10 मात्राओं के योग से निर्मित ताल है । इसमें 4 विभाग होते हैं । 3 ताली तथा । खाली होती है । 1, 3, 8 पर ताली तथा 6 खाली होती है । 2–3, 2–3 मात्राओं के चलन के अनुसार विभाग होते हैं । कथक नृत्य के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण ताल है । इसका ठेका इस प्रकार है–

धी ×	ना ।	धी	धी	ना ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ती	ना |	धी	धी	ना।	धी
0		3			×

एकताल–यह मुख्यत: तबले का ताल है । यह ताल 12 मात्राओं के योग से बना है । इस ताल में दो-दो मात्राओं के 6 विभाग है तथा 4 ताली और 2 खाली होता है । 1, 5, 9, 11 पर ताली तथा 3, 7 पर खाली दिखाई जाती है । गायन शैली के लिए भी यह बहुत महत्त्वपूर्ण ताल है । गायन शैली के बड़ा खयाल या बिलंबित इस ताल में अधिकतर गाए जाते हैं । इसका ठेका इस प्रकार है ।

ठेका–

धिं	धिं |	धागे	तिरकिट |	तू	ना।	
×		0		2		
क	ता |	धागे	तिरकिट |	धी	ना |	धिं
0		3		4		×

तालों को ठाह दुगुन एवं चौगुन की लयकारियों में लिखने का ज्ञान

तीन ताल ठाह–

धा	धिं	धिं	धा |	धा	धिं	धिं	धा |	
×				2				
धा	तिं	तिं	ता |	ता	धिं	धिं	धा ।	धा
0				3				×

दुगुन :

× धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा ।		
2 धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा ।		
0 धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा ।		
3 धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा ।	×धा	

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चौगुन –

धाधिंधिं धा ×	धाधिंधिंधा	धातिंतिंता	ताधिंधिं धा ।
धाधिंधिं धा 2	धाधिंधिं धा	धातिंतिंता	ताधिंधिं धा ।
धाधिंधिं धा 0	धाधिंधिं धा	धातिंतिंता	ताधिंधिं धा ।
धाधिंधिं धा 3	धाधिंधिं धा	धातिंतिंता	ताधिंधिं धा ।

धा ×

झपताल–

धी ×	ना	|	धी 2	धी	ना	|
ती 0	ना	|	धी 3	धी	ना	| धी ×

दुगुन–

धी ना 0	धीधी	|	नाती 2	नाधी	धीना	|
धी ना 0	धीधी	|	नाती 3	नाधी	धीना	| धी ×

चौगुन–

धीनाधीधी ×	नातीनाधी |	धीनाधीना 2
धीधीनाती	नाधीधीना |	धीनाधीधी 0
नातीनाधी |	धीनाधीधी 3	धीधीनाती
नाधीधीना | धी ×		

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

एकताल–ठाह :

धिं	धिं।	धागे	तिरकिट।	तू	ना।	
×		0		2		
क	ता।	धागे	तिरकिट।	धीं	ना।	धिं
0		3		4		×

दुगुन

धिंधिं	धागे तिरकिट |	तूना	कता |	धागेतिरकिट	धीना |
×		0		2	
धिंधिं	धागे तिरकिट |	तूना	कता |	धागेतिरकिट	धीना |
0		3		4	
धि					
×					

चौगुन :

धिंधिं धागे तिरकिट	तूना कता |	धागेतिरकिट धीना	
×		0	
धिंधिं धागे तिरकिट |	तूना कता	धागेतिरकिट धीना |	
	2		
धिंधिं धागे तिरकिट	तूना कता |	धागेतिरकिट धीना	
0		3	
धिंधिं धागे तिरकिट |	तूना कता	धागेतिरकिट धीना |	धि
	4		×

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रश्न

1. तीनताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ? इस ताल का पूर्ण परिचय लिखें ।
2. 12 मात्राओं के योग से किस ताल का निर्माण होता है ? उस ताल का दुगुन एवं चौगुन लिखें ।
3. 48 मात्राओं के अंतर्गत कौन-कौन सी तालें बनती हैं ? उनके नाम लिखें तथा उन सभी तालों को चौगुन को लिखें ।
4. झपताल का पूर्ण परिचय देते हुए ठाह, दुगुन एवं चौगुन की लयकारियाँ लिखें ।
5. तीनताल का ठाह, दुगुन एवं चौगुन की लयकारियों को लिखें ।

❑

भारत में शास्त्रीय नृत्य 7 प्रकार के हैं- परन्तु हाल फिलहाल में एक और शास्त्रीय नृत्य जोड़ा गया है तो कुल 8 शास्त्रीय नृत्य हो गए।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4

बिहार के लोक नृत्यों का वर्णन

बिहार लोक कला में अतिसमृद्ध है। इसकी माटी से लोक कला की सोंधी खुशबु आती हैं। "लोक" शब्द का बड़ा विराट अर्थ है, लोक संस्कृति तो लोकजीवन का आईना है। जिस प्रकार लोकशक्ति से बड़ी कोई शक्ति नहीं होती उसी प्रकार लोककला से बड़ी कोई कला नहीं होती ।

लोक नृत्य बिहार के जन जन में विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र में पूर्ण रूप से जीवित है या यो कहें वहाँ इसका शुद्ध रूप देखने को मिलता है, शहरों में यह मिलावटी होता जा रहा है, लोक नृत्य में रस का गहरा समावेश होता है जिसे कलाकार, श्रोता और दर्शक एक ही साथ महसूस करते हैं।

बिहार के प्रत्येक क्षेत्र एवं जिले में सभी सामाजिक मौके त्योहार, शादियाँ, बच्चे के जन्मोत्सव, सोलहों संस्कार के समय यहाँ तक कि दिनचर्या में अर्थात पानी भरने के समय, जाँता चलाते समय छोटे-एवं बड़े मौकों पर लोकगीत वांछनीय है जहाँ लोक गीत होगा वहाँ स्वत: ही भाव भंगिमाएँ आरम्भ हो जाती हैं जिसे लोक नृत्य की उपाधि दी गई हैं।

बिहार को भारत का हृदय कहा जाता है। मानव शरीर में जीवन हृदय की धड़कन तक ही है जब हृदय की धड़कन समाप्त हो जाती है तो उसी क्षण यह शरीर निष्प्राण हो जाता है, ठीक इसी प्रकार बिहार की सोंधी मिट्टी से निकली नृत्य की टोलियाँ जब अपने अंचल से बाहर जाती है तो मानो संपूर्ण स्थान प्राणयुक्त हो जाता है। बिहार में लोक नृत्यों की गौरवशाली परम्परा रही है, विगत दो सौ सालों में इन पर अनेक आघात हुए परन्तु लोकनृत्यों ने अपना अस्तित्व नहीं खोया ।

लोकनृत्य जीवन की समृद्धि एवं उत्कृष्टता की सर्वाधिक सरल अभिव्यक्ति हैं। मनुष्य के अन्दर अनेक भावनाएँ जन्म लेती हैं समय एवं काल के अनुसार भावनाओं में बदलाव आता है। प्रात:काल या भोर के समय मन एवं चित्त अत्यंत प्रसन्न रहता है, चिड़ियों की चहचहाहट, तो इसी समय शरीर की भाव भंगिमाएँ आरम्भ हो जाती है, बिल्कुल बिना किसी बन्धन के उन्मुककण्ठ से अपनी मातृभाषा में कुछ बोल निकल पड़ते हैं जो गीत बन जाता है और लोकगीत कहलाता है। इन्हीं गीत के बोल पर भाव भंगिमाएँ होने लगती है जो लोकनृत्य कहलाती हैं।

इतिहास साक्षी है कि प्राचीन काल में जब मनुष्य कन्दराओं और गुफाओं में रहता था तो उसके पास भाषा नहीं थी। कुछ समय के उपरान्त वह इशारों में बाते करता था। इसके बाद धीरे-धीरे भित्तिचित्र

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बनाने लगा उसकी वह लिपि थी जिसे "पिट्रोरियल" स्क्रीप्ट भी कहते हैं। इसी प्रकार भाव भंगिमाएँ बनती चली गई मन की उमंगे एवं तरंगे भाव बनकर शरीर का संचालन करवाने लगी। अत: कृषक एवं जनजाति समुदायों के नृत्य मानव विकास के इतिहास है।

लोक नृत्य सर्वथा किसी स्थान विशेष, जाति विशेष, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अथवा जातिगत विशिष्टताओं का प्रतीक होता है।

भारत मुख्यत: कृषि प्रधान देश रहा है । गंगा के तट पर बसा प्रदेश बिहार इसमें प्रमुख है जहाँ नृत्य एवं गीतों में खेत की सोंधी गिट्टी की खुशबु आती है।

लोक नृत्यों में कुछ नृत्य बहुत ही प्रसिद्ध है-

जैसे-(1) जट-जाटिन (2) झूमर (3) झिझिया (4) झमटा।

आगे इन नृत्यों का वर्णन है-

☛ जट-जाटिन नृत्य :

जट-जाटिन नृत्य मुख्यत: मिथिलांचल का है यह नृत्य नाटिका के जैसा होता है। इस नृत्य में स्त्री एवं पुरुष नृत्य करते हैं एक जटिन होती है और दूसरा उसका पति जट । मुख्यत: पति-पत्नी के नोक झोक को बड़े ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

जो जट बनता है उसका पोषाक होता है धोती बदन पर गंजी (बनियाईन) और माथे पर पगड़ी। जाटिन जो बनती है वह थोड़ी ऊँची साड़ी सिर पर पल्लू और पूर्ण जेबर पहने हुए रहती है इसमें अभिनय नृत्य के साथ इस प्रकार किया जाता है-जट-जाटिन की माताएँ विवाह की बात करती है, परन्तु जट की माता को यह विवाह पसन्द नहीं है परन्तु बाद में धन के प्रलोभन से विवाह के लिए तैयार हो जाती है विवाह हो जाता है। जटिन ससुराल विदा होती है ससुराल में जट उसे सामाजिक सुलभ व्यवहार सिखलाता है। जाटिन समझना नहीं चाहती ऐंठन दिखाती है, ये सारा दृष्टांत नृत्य के माध्यम से ही दिखलाया जाता है, और इस गीत पर जट एवं जाटिन भाव का प्रदर्शन करते हैं-

नवि के चलिगे जटिनयाँ नवि के चलिगे
जइसे नवे काँच करचिया तइसे नवि के चलिगे

जट जाटिन को नम होकर अर्थात नम्रता से चलने या रहने को सिखा रहा है। परन्तु जाटिन मानने को तैयार नहीं। होती तब अंतत: जाटिन की फरमाईश पूरी करने के लिए जट पूरब की ओर नौकरी करने चला जाता हैं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जट के जाने के बाद जाटिन उसके वियोग में दुखी हो जाती है और उसे ढूंढने निकलती है वह उसे ढूंढ़ तो लेती है, परन्तु वह छोड़ कर चला गया था, इसी बात पर पुनः गुस्सा होकर रूठ जाती है और अब रूठने तथा मनाने का क्रम चलता है इस पर जो नृत्य होता है वह बहुत ही सुदंर होता है प्रस्तुत गीत पर यह नृत्य दर्शाया जाता है।

जाटिन–टिकवा जब जब मंगलिअऊ रे जट्वा
टिकवा किये न आनले रे
अरे बाली समइया रे जट्वा
टिकवा किये न आनले रे।

जाट– टिकवा जब-जब अनयिऊ सो जाटिन
टिकवा लिये न पेन्हले रे
अरे बाली समइया में जाटिन
नैइहर किये गमओले रे।

जाटिन ठुनक कर कहती है कि मैंने एक टीका ही तो मांगा मगर तुम वह भी नहीं दे सके मैं कैसे तुम्हारे घर में रहूँ यह बताते हो कि तुमने अपने माइके में उसे खो दिया। इसी प्रकार समस्त जेवर के बारे में ऐसी ही बाते होती है और मान मनउल होता है, अन्ततः जट-जटिन को मना लेता है और अपने घर ले जाता है। मंच पर वाद्य यंत्र में हारमोनियम, ढोलक और लोकगीत की आवश्यकता होती है।

झूमर-झूमर अधिकतर भोजपुर क्षेत्र में किसी भी उल्लास के अवसर पर करने की प्रथा है। इस समय गाये जाने वाले गीत प्रायः श्रृंगारिक होते हैं, जिसमे पति पत्नी के मान मनउअल नोक-झोंक होता है। कोई पत्नी अपने पति से कान का लटकन लाने के लिए मान या जिद करती है। इसके लिए वह घर का भूसा, बैल अनाज, बच्चे यहाँ तक की पति को भी बेचने को तैयार हो जाती है -

पत्नी- भुसवो बिकाय, मोहि ला देह लटकन
पति- भुसबिकि जइहे तो बैल का खइहे
पत्नी- अरे बैलो बिकाय मोहि लाय देहु लटकन
पति- बैल बिकि जइऐ तो नाज (अनाज) कैसे होई है
पत्नी- अरे नाजो बिकाय मोहि लाये देहु लटकन

प्रस्तुत गीत से यह प्रतीत होता है कि स्त्री किस तरह से विचलित है अपने गहने के लिए इस

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नृत्य में स्त्रीयाँ खूब झूम-झूम कर नृत्य करती है, इसमें भी वाद्य यंत्र में ढोलक, हारमोनियम, खंजरी की आवश्यकता होती है, पोषाक चमकदार सीधा पल्ला साड़ी, आभूषण पहने रहती है सजावट पूरी रहती है क्योंकि उत्सव के अवसर पर किया जाता है।

करिया झूमर-मिथिलांचल में भी झूमर की परम्परा मिलती है। इसे करिया झूमर कहते हैं। करिया-काला और झूमर का अर्थ झूम-झूम का चक्कर में घूमना उत्तर भारत के बहुत स्थान पर झूमर होते हैं। बिहार के मिथिलांचल में भी लोकोत्सव आदि पर करिया झूमर होता है। लड़कियाँ एक दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल-गोल घूमती हुई नृत्य करती है। यह बहुत तेज गति में होता है। नृत्य का पोषाक चमचमाता हुआ परन्तु गाढ़ा नीला या काला होता है और मुख्य रूप से यह नृत्य रात्रि वेला में होता है। इसलिए इसका नाम करिया झूमर है।

झिझिया–बिहार में झिझिया नृत्य बहुत प्रसिद्ध हैं। इस नृत्य में छिद्रदार घड़ा होता है जिसके अन्दर एक जलता हुआ दीपक रखा होता है, नृत्यांगनाएँ इतने तेजी से नृत्य करती हैं कि उस छिद्र को गिनना बहुत कठिन होता है। इसके विषय में कुछ कहानियाँ भी है जैसे एक कहानी है कि–

मुगल काल के राजा चित्रसेन और उनकी पत्नी थी, राजा उम्र में अधिक थे रानी से और शरीर से भी बेडौल, रानी राजा से बिल्कुल संतुष्ट नहीं थी तभी एक दिन राजा का भांजा बालुरूचि आता है अपने मामा के पास। बालुरूचि देखने में अत्यंत सुंदर था और कुषाग्र बुद्धि वाला नौजवान था, रानी को बालुरूची के लिए आकर्षण उत्पन्न हुआ परन्तु बालुरूचि ने स्वस्थ मन से उन्हें बहुत समझाया। न समझने पर उसने उन्हे झिड़क दिया जिस पर रानी क्रोधित हो गई और राजा के मनाने पर उन्होंने शर्त में बालुरूचि का रक्त रँजित कलेजा मांगा। राजा शोककुल हो गए परन्तु वचनवद्धता के चलते उन्होंने जल्लादों के साथ जंगल में भेज दिया, वहाँ एक जादुगरनी तंत्र सिद्धी कर रही थी उसने जादू से जल्लादों को मार दिया और बालुरूचि पर मन्त्र सिद्धि करने लगी और एक दिन बालुरूची महल में आया तब तक रानी को पश्चाताप

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हो रहा था और बालुरूची को जीवित देख दोनों अत्यन्त प्रसन्न हुए परन्तु जादुगरनी भी आ गई और जबरदस्ती बालुरूची को जादु के बल से ले जाने लगी तब रानी आई और बोली मैंने भी इतने दिनों में कुछ सिद्धि की है। रानी ने एक घड़ा लिया जो छिद्रयुक्त था और उसके अंदर एक जलता हुआ दीपक रखा था। रानी ने कहा मैं घड़े को सिर पर रख कर नृत्य करूंगी यदि तुम झिझिया करते हुए मेरे घड़े के छिद्र को सही-सही गिन लोगी तो तुम जीती अन्यथा मैं, जीती और तुम्हारी शक्ति सामाप्त। जादुगरनी मान गई कहा यह कौन-सा भारी काम है, रानी नृत्य करने लगीं जादुगरनी नहीं गिन पाई और मुर्छित हो गई बालुरूची बच गया और रानी जीत गई और इस नृत्य को ही झिझिया कहा जाता है। झिझिया दशहरे के समय मन्त्र सिद्धि करने के लिए भी किया जाता है। वर्षा नहीं होने पर इन्द्र देवता के आवाहन हेतु भी किया जाता है। इसे झिझिया खेलना भी कहते हैं, रात्रि में स्त्रियाँ सिर पर छिद्रदार घड़ा लेकर झूमकर यह गीत गाकर नृत्य करती हैं–

हाली हुली बरसू इंनर देवता
पानी बिनु पड़ई अकाल हो राम।

कहीं नवरात्र में लड़कियाँ डायन एवं जादुगरनी से रक्षा हेतु इस नृत्य को करती हैं इसका गीत इस प्रकार है–

झिझिया खेलइते डयनी डरवा चलक लगे
डइनी तोहरो मंतरवा से झिझिया फूटेलगे।

एक अन्य गीत का भाव है कि झिझिया न बुझने पाए क्योकि डयनी का नृत्य मजेदार है–

दियरा के टेम झुक-झुक बरइय गे झिझिया
डयनी के नाच मजेदार आगे झिझिया।

झिझिया में औरतें या लड़कियाँ चुनरी सीधा पल्ला साड़ी सिर पर घड़ा तथा पूर्ण जेवर में रहती है।

झमटानृत्य–यह नृत्य थारू जन जाति का अति प्रसिद्ध नृत्य है। पश्चिम चम्पारण-बेतिया में नेपाल सीमा बाल्मिकी नगर में मैना हाँड़ तक जंगल पहाड़ के बीच यह नृत्य होता है। ये लोग देखने में पूर्वोत्तर वासी जैसे होते हैं परन्तु इन लोंगो की व्युत्पति के विषय में विशेष पता नहीं चल पाया है। शरीर हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इनकी कोई अपनी विशेष भाषा नहीं है जहाँ रहते हैं वहीं की भाषा बोलते हैं।

नृत्य स्त्री, पुरुष दोनो करते हैं साधारण साड़ी थोड़ी ऊँची कमर में लपेटा हुआ, कुछ चांदी कहीं-कहीं फूल के आभूषण, पुरुष धोती, गंजी, गमछी सिर पर बांधे गोल-ठोल घूम-घूम कर इसे करते हैं। बाजा में–मांदल हाथ में झुनझुना लेकर इसे करते हैं। गीत नेपाली और भोजपुरी का सम्मिश्रण रहता है। इसकी संस्कृति महिला प्रधान है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रश्न

1. लोक नृत्य किसे कहते हैं? लोक शब्द के अर्थ से क्या समझते हैं।
2. भारत का हृदय किसे कहा जाता है? और क्यों? अपने भाषा में लिखें।
3. लोक नृत्य का प्रारम्भ कैसे हुआ, बताएँ।
4. जट- जाटिन नृत्य की विशेषता एवं इसके पोषाक एवं वेशभूषा के विषय में बताएँ। इसके गीत को लिखें।
5. झूमर नृत्य किसे कहते हैं तथा झूमर नृत्य कितने प्रकार के हैं?
6. झिझिया नृत्य की कथा अपनी समझ से लिखें तथा झिझिया किन-किन अवसरों पर किया जाता है बताएँ।
7. झूमर नृत्य कौन से जन-जाति के लोग किया करते हैं? यह नृत्य कहाँ की विशेषता है?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5

पारम्परिक वेश-भूषा एवं रूप-सज्जा

कथक :

भरतमुनि ने कहा है "समस्त नाट्य प्रयोग आहार्य अभिनय में स्थित है।" यह नाट्य का अलंकार है। नृत्य शैली की पहली पहचान वेश-भूषा ही होती है। यदि हम नृत्य की बारीकियों से अनजान है तब भी हम सिर्फ वेश-भूषा और रूप सज्जा से नृत्य शैली को जान सकते हैं। नृत्यकला हमारे जीवन-शैली से ही प्रभावित है। कथक नटवरी नृत्य उत्तर भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक राजनीतिक बदलाव के कारण इस क्षेत्र में सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव भी हुए जिसका असर नृत्य कला पर भी पड़ा। कभी हिन्दु राजाओं का शासन था, तो कभी मुसलमानों और कभी अंग्रेजों का शासन रहा। नृत्य का स्वरूप भी बदला और वेश-भूषा भी प्रभावित हुए।

वर्तमान समय में नृत्य शैलियाँ भी कोई पूर्व निर्धारित नहीं हैं। श्री अच्छन महाराज आदि नर्त्तक भी सामान्य जीवन की वेश-भूषा चूड़ीदार पायजामा और कुर्ता, अंगरखा पहनकर बिना किसी मेक अप के नृत्य किया करते थे। किन्तु अब जब नृत्यकला मंदिरों, महफिल और क्षेत्रीय दर्शकों से हटकर रंगमंच पर आया तो इसमें वेश- भूषा रूप-सज्जा का महत्व बढ़ गया और नर्त्तक अब इसे आकर्षक ढंग से सुसज्जित करने में जुट गए। अब नृत्य कला में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, पहचान बनाने के लिए प्रत्येक शैली को अपनी विशिष्ट वेश-भूषा विकसित करनी पड़ी। कथक नृत्य की वेश-भूषा अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रिय है। इसका वर्त्तमान स्वरूप मुख्यतः उत्तर भारत के हिन्दू और मुस्लिम दरबारों में विकसित हुआ है अतः पुरुषों के लिए चूड़ीदार पायजामा, अंगरखा और कमर में दुपट्टा कथक नर्त्तकों का वेश-भूषा निर्धारित हो गया। इसी प्रकार राजस्थान की स्त्रियों और ब्रज की गोपियों द्वारा पहननेवाली वेश-भूषा लहंगा ओढ़नी कथक नृत्यांगनाओं द्वारा अपना लिया गया है। मुगलकालीन वेश-भूषा के अंतर्गत 'पेशवाज' आता है जिसमें चूड़ीदार पैजामा, लंबी घेरदार फ्रॉक, जैकेट और दुपट्टा रहता है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भरतनाट्यम

नृत्य मुख्य रूप से दृश्य कला है। अतः यह आवश्यक है कि मंच पर उपस्थित होने वाले नर्त्तक का परिधान सुन्दर व सुरूचिपूर्ण हो, जो आँखों को देखने में भला लगे। वेश-भूषा एक वाह्य आवरण नहीं होता है बल्कि वह नृत्य के चरित्र और पृष्ठभूमि का वर्णन करता है। यदि नर्त्तक भ्रमरी के प्रकार को दर्शाता है तो उसका वेश-भूषा इसमें चार चाँद लगा देता है। भरतनाट्यम की वेश-भूषा प्राचीन काल से एक ही चली आ रही है। यह वेश-भूषा विशेष आकर्षक और कलात्मक होती है जो प्राचीन नर्त्तकियों की याद दिलाती है। पुराने समय में नर्त्तकियाँ कांजीवरम् साड़ी और दक्षिण भारतीय महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले सामान्य आभूषण धारण करके ही नृत्य किया करती थी। राज दरवारों में नृत्य करने वाली नर्त्तकियों के चित्रों में वे विशिष्ट वेश-भूषा में ही दिखाई देती हैं। किन्तु आज जो वेश-भूषा भरतनाट्यम की पहचान बन गई है, उसकी परिकल्पना श्रीमती रूक्मिणी देवी अरूण्डेल ने की थी। यह पूरी तरह सिलाई की हुई होती है। आकर्षक और गाढ़े रंग की कांजीवरम् साड़ी को चुन्नट के साथ सिलाई की जाती है। कमर से ऊपर अर्धचन्द्राकार फड़का होता है जिसमें चुन्नट लगा हुआ पंखा की तरह सिलाई की जाती है। बदन पर ब्लाउज होता है। पाँव में घुँघरू बांधे जाते हैं जो कथक नृत्य से अपेक्षाकृत कम होते हैं। भरतनाट्यम में पहने जाने वाले आभूषण को टेम्पल ज्वेलरी कहते हैं। माथे पर टीका लगाया जाता है और सिर मे दोनों ओर चन्द्राकार और सूर्य के प्रतीक दो गहने होते हैं। पीछे की ओर वेणी में मयूर आकार का आभूषण रहता है जिसे राकोड़ी कहते हैं। राकोड़ी ऊपर की ओर उठी रहती है। जिसे पीले या सफेद फूल से सजाया जाता है। नाक के दोनों ओर मक्कू पहने जाते हैं। बीच में मोती जड़ा बुलाक होता हैं, बाहों में वंगी नामक बाजूबंद तथा गले में लटकती चन्द्रहार या काशीमाला रहती हैं। इस प्रकार भरतनाट्यम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नर्त्तकी नख-शिख शृंगार से पूर्ण सुसज्जित होती है। कथक नृत्य में बहुत अधिक शृंगार की आवश्यकता नहीं होती है। वेश-भूषा पहनकर सादे ही मेक अप करके नर्त्तक नृत्य के लिए तैयार होते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि वर्त्तमान काल में कोई एक नियम नहीं रहा है। अतः अपनी इच्छानुसार या परम्परागत वेश-भूषा को ही कलाकार महत्व देते हैं। शास्त्रों के अनुसार नर्त्तकों की पोशाक ऐसी होनी चाहिए जिससे भाव की अभिव्यक्ति में कोई रूकावट न हो और अंगो का संचालन स्पष्ट रूप से दिखे। रंगों का चुनाव भी ऐसी होनी चाहिए जिससे नृत्यकार का सौंदर्य और खिल जाय।

अतएव नृत्य की शैली और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से वेश-भूषा एवं वेश-सज्जा का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मणिपुरी नृत्य

मणिपुरी नृत्य का वेश-भूषा बड़ा ही मनमोहक है। जैसा ललित्य, नृत्य में है वैसा ही पोशाक भी। रास नृत्य में राधा का जड़ीदार लंहगा बिल्कुल गोल, एक फ्रेम पर गढ़ा रहता है। उसके ऊपर से जालीदार कपड़े का फ्रिल जैसा होता है। जरी लगा ब्लाउज होता है, सिर पर जूड़ा और जूड़ा के पास मुकुट रहता है, जिस पर से एक रूपहला या सुनहला जाली का दुपट्टा होता है।

नर्त्तकी जेवर में, गले में, कान में तथा हाथ में चूड़ी सुनहले रंग का पहनती हैं। पैर में पाजेब रहता है। इस नृत्य में घुंघरू नहीं पहना जाता है। ललाट पर बहुत सुन्दर लाल एवं चमकीली बिन्दी लगाकर नर्त्तकी अत्यन्त सुन्दर दिखती हैं।

नर्त्तक कृष्ण की भूमिका में रहते हैं और उनका पोषाक होता है पीला रेशमी धोती, ऊपर से मखमली छोटा सा आधे बाँह का मिरजई जैसा पहनते हैं। जरीदार चौकोर टुकड़ा धोती पर दोनों बगल झूलता रहता है। सिर पर मुकुट और उसमें मोर का पंख लगा रहता है, नर्त्तक पूर्ण आभूषण में रहते हैं पांव में पायल जैसा पहनते हैं घुंघरू नर्त्तक भी नहीं पहनते क्योंकि पांव जमीन पर मारा नहीं जाता बल्कि बहुत ही धीरे पद संचालन अर्थात कोमलता से किया जाता है। इस प्रकार मणिपुरी नृत्य में रास का यही पोषाक होता है।

परन्तु पुंग चोलम पोषाक में सादी धोती, बदन पर सफेद और लाल अंगवस्त्र सिर पर पगड़ी पहनते हैं और हाथ में बाला पाँव में मोटा-सा कड़ा जैसे पहनते हैं।

मंजिरा चोलम–इस नृत्य में नर्त्तकी धारीदार लुंगी लाल या कत्थई ब्लाउज और सादा दुपट्टा ओढ़ती है। कान में हल्का जेवर, हाथों में चूड़ी, गले में हल्का-सा हार रहता है। इस प्रकार से मणिपुरी नृत्य का पोषाक गौरवपूर्ण होता है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ओड़िसी नृत्य (वेश-भूषा)

ओड़िसी उड़िसा का शास्त्रीय नृत्य है, इस नृत्य के पोषाक से राज्य की झलक मिलती है। ओड़िसी में नर्त्तकी प्रारंभ में माहरी और देवदासी के समय में सफेद साड़ी और पुष्प के जेवर से सुसज्जित रहती थी। कालान्तर में वेश-भूषा में बदलाव आया जैसे आज के समय में संबलपुरी साड़ी (संबलपुरी उड़िसा में एक स्थान है जहाँ रेशमी साड़िया हाथ से बुनकर बनाते हैं)। पहले साड़ी को धोती जैसा पहनाया जाता था परन्तु आज बिल्कुल सिला-सिलाया खूबसूरत वस्त्र आता है, चार भाग जुड़ जाते हैं। आगे में पंखे के समान रहता है जो बैठने पर खुल जाता है, अब जेवर पहना जाता है, जेवर में उड़ीसा का चाँदी का जेवर बहुत प्रसिद्ध जिसे (फिलिगिरी) काम भी कहते हैं।

इसमें अत्यंत खूबसुरत जालीदार चाँदी के जेवर रहते हैं। नर्त्तकी यही जेवर पहनती है। कान में पत्ता बना हुआ जिससे पूरा कान ढका जाता है और बड़ा-सा झुमका लटका रहता है, गले में चिक फिर एक लम्बा बड़ा-सा लॉकेट वाला हार, हाथ में जालीदार चौड़ा बड़ा बाजुबन्द लाल धागे से गुथा हुआ रहता है। कमर में पान जैसा चाँदी का छोटा-छोटा ऊपर वाली पँक्ति में करीब 50 पान आकार का गुथा रहता है। उसके नीचे 2 रुपया के सिक्का बराबर वह भी 50 सिक्का गुथा रहता इसी क्रम को दोहराया जाता है अर्थात् 4 पँक्ति में यह चौड़ा-सा भारी सा कमरधनी होता है जिसे यहाँ की बोली में कमर पेटी कहते हैं। पाँव में चौड़ा पायल और उसके उसके ऊपर एक-एक पाँव में 100 घुंघरू पहने जाते हैं। चेहरे की सजावट खूब की जाती है आँख में सुंदर तरीके से काजल भौंह पर पेन्सिल चलाई जाती है। बिन्दी लाल और उसके चारों तरफ सफेद से बिन्दी बनायी जाती है। जूड़े में शोला (पानी में उगता है सफेद

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रंग का जिसके मुकुट फूल आदि बनते हैं) से बना चौड़ा गजरा जो जूड़े में लगाया जाता है। बीच में सिर से सटे खोंस दिया जाता है। मांग पर टीका और टायरा पहनती है और अब जाकर पूरी तैयारी होती है। केवल पाँव में आलता बचता है जिसे अन्त में लगाते हैं। आलता हाथ पैर दोनों में लगाया जाता है और नर्त्तकी पूर्ण रूप से सज-धजकर मंच पर जाने हेतु तैयार होती है।

प्रश्न

1. मणिपुरी नृत्य की वेश-भूषा क्या होती है?
2. ओड़िसी नृत्य में नर्त्तकी कैसा जेबर पहनती हैं?
3. ओड़िसी नृत्य का पोषाक कैसा होता है?
4. 'रास लीला' का पोषाक कैसा होता है?
5. पुंग चोलम का पोषाक कैसा होता है?
6. कथक नृत्य का मुगलकालीन वेश-भूषा क्या था?
7. कथक में पुरुषों द्वारा किस प्रकार का पहनावा प्रचलित हैं?
8. 'पेशवाज' किस प्रकार की वेश-भूषा है?
9. 'भरतनाट्यम' की वेश-भूषा प्रचलित करने का श्रेय किसे प्राप्त है?
10. 'राकोड़ी' किसे कहते हैं?
11. 'भरतनाट्यम' नृत्य की वेश-भूषा का वर्णन करें।

❑

8 शास्त्रीय नृत्य इस प्रकार से हैं-
(1) कथक-उत्तर भारत (2) भरतनाट्यम तमिलनाडु (दक्षिण भारत) (3) मणिपुरी-मणिपुर (4) ओड़िसी-ओडिशा (5) कथ कली-केरल (6) मोहिनीअट्टम-केरल (7) कुचिपुड़ी-आन्ध्रप्रदेश (8) सैत्रिय-असम (नवीन शास्त्रीय नृत्य)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

6

पाश्चात्य नृत्य शैलियों का अध्ययन

पाश्चात्य देशों में प्रचलित नृत्य शैली को पाश्चात्य नृत्य शैली कहा जाता है । पाश्चात्य नृत्यकला का जन्म लगभग पन्द्रहवीं शताब्दी में इटली में तो हुआ, किन्तु इसे कलारूप देने का श्रेय फ्रांस को है । इसलिए फ्रांस को आधुनिक पाश्चात्य नृत्य शैली की जननी कहा जाता है । पाश्चात्य शैली के नृत्य के लिए यूनान, इटली, फ्रांस, नार्वे, स्वीडेन आदि देशों के नाम उल्लेखनीय हैं जहाँ पाश्चात्य शैली का विकास हुआ । भारत के समान ही स्पेन और फ्रांस के गुहा-चित्रों में कुछ आकृतियाँ नृत्य करती दिखाई पड़ती हैं जिससे यह अनुमान लगाया जाता है, कि पूर्व ऐतिहासिक युग में, यूरोपीय आदि मानव, घटनाओं को जादुई-तरीके से प्रभावित करने के लिए नृत्य करता था । इसी प्रकार मिस्र, यूनान, रोम और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों के ऐसे लिखित उल्लेख व चित्र प्राप्त हुए हैं जिनमें उन देशों में प्राचीनकाल में प्रचलित नृत्यों का विवरण है । पश्चिम के लोगों का कहना है कि नृत्य सिर्फ मनोरंजन एवं विश्राम देने के लिए है ।

पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के पुनर्जागरण के काल के बाद ही पाश्चात्य नृत्य मुख्यत: दो धाराओं में विकसित हुआ जिन्हें सामान्य रूप से बॉलरूम डान्स और थियेट्रिकल या बैले डान्स कहते हैं । इसके अलावा पाश्चात्य देशों में अन्य प्रकार के नृत्य भी प्रचलित हैं । इनमें से कुछ नए और कुछ पुराने भी हैं । रॉक एण्ड रौल, तारनताल साल तारेली, ब्रल्लेश, ड्रोकनी, रैकी, स्ट्रीपरीज चा चा चा और ट्विस्ट आदि ।

बॉलरूम डॉन्स–बॉलरूम डॉन्स प्राचीन दरबारी नृत्य से ही निकला है । यह वो सामाजिक या लोकप्रिय नृत्य है जो स्त्री-पुरुष युगल द्वारा पूर्व निर्धारित संगीत की लय पर निजी समारोह या सार्वजनिक सभागारों में सदैव ही नाचे जाते हैं । इसमें स्त्री का बायाँ हाथ पुरुष के दाएँ कन्धे पर और पुरुष का दायाँ हाथ स्त्री की कमर पर टिका हुआ रहता है । स्त्री का दायाँ और पुरुष का बायाँ हाथ आगे की ओर मिलकर झुका हुआ रहता है । व्यक्तिगत समारोह या सार्वजनिक उत्सवों पर बिना बॉलरूम डान्स के कार्यक्रम सम्पन्न नहीं होता है । नृत्य करते समय शरीर का निचला भाग ही चलता है । अर्थात् ये नृत्य मुख्यत: पाद-चारियों से ही सम्पन्न होते हैं । इन पादचारियों के अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत नियम क्रम हैं । बॉलरूम नृत्यों में 1820 से 1910 ई० तक जो लोकप्रिय नृत्य थे, उनके नाम है –वाल्ट्ज (Walti) क्वाड्रील (Quadrille) और पोल्का (Polka)। प्रथम विश्वयुद्ध के ठीक पहले निग्रो नृत्य और दक्षिणी अमेरिका के नृत्य यूरोप पहुँचे और टैगों (Tango) तथा टुम्बा (Tumba) नृत्य आकर्षण केन्द्र बने । ये लैटिन अमेरिकन नृत्य में सर्वश्रेष्ठ थे । जो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नृत्य थे । यूरोप की युवा पीढ़ी ने इस उत्तेजक नृत्य को तेजी से अपना लिया ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उन्नीसवीं शताब्दी में कुछ और प्रकार के नृत्यों का प्रचलन हुआ । वे थे वन स्टेप, टू स्टेप, टर्की ट्राट, फॉक्स ट्राट, और क्लिक स्टेप । इसके बाद रॉक एण्ड रोल, ट्विस्ट, डिस्को शेक इत्यादि प्रचलित हुए । इसके बाद ब्रेक डॉन्स का दौर चला जो केवल लयात्मक व्यायाम मात्र सिद्ध हुआ । ब्रेक डान्स में त्वरित गति के कारण शरीर के जोड़ो को हानि होने लगा । अत: अमेरीका जैसे–देशों ने उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया । भारत में एरोबिक्स नामक नृत्य शैली का प्रवेश हुआ जिसमें व्यायाम पूर्ण नृत्य गतियों को स्थान दिया गया । ये सभी नृत्य थोड़े-थोड़े समय तक मुख्य नृत्य के रूप में प्रचलित रहे और चले-गए तथा युवा पीढ़ी के समक्ष नई खोज का संकेत कर गए । इन सभी के अतिरिक्त भी कतिपय अन्य नृत्य है जो बॉलरूम नृत्य की श्रृंखला में आते हैं । ये सभी नृत्य अपने आत्मिक आनन्द के लिए किए जाते हैं । बॉलरूम नृत्य पाश्चात्य जनजीवन का अपरिहार्य अंग है ।

बैले–बैले पाश्चात्य देशों में विकसित एक अत्यन्त समृद्ध रंगमंचीय कला है, जिसमें संगीत, मंच सज्जा और विशिष्ट वेश-भूषा के साथ अत्यधिक शैलीबद्ध नृत्य की योजना की जाती है । बैले-में किसी वर्णनात्मक विषय वस्तु को ताल लय के साथ नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है । बैले शब्द की व्युत्पत्ति इटालियन भाषा के बेलरे शब्द से हुई है जिसका अर्थ है–नृत्य करना । बैले में एक विशेष प्रकार की दृश्यात्मक नृत्य होती है । बैले का अर्थ है–विविध नृत्यों को जोड़कर श्रृंखलाबद्ध होकर समूह द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाला नृत्य। 15वीं 16वीं शताब्दी में इटालियन बैले की परम्परा चली जिसमें किसी कथानक के आधार पर मूक अभिनय, गीत, संगीत वेश-भूषा के साथ नृत्य प्रस्तुत करते थे । कलात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से बैले एक समृद्धशाली परम्परा लेकर विकसित हुआ । बैले से अलग शैली करने के लिए अनेक पाश्चात्य नृत्यों को तरह-तरह के विशेषता लगाकर प्रचलित किया गया जैसे–एक्सक्लूसिव डॉन्स, ओरिएन्टल नृत्य, फ्री डॉन्स, ग्रीसीयन डॉन्स, नैचुरल डॉन्स इत्यादि। बैले के अतिरिक्त जो नृत्य प्रचलित हुआ उस पर अमेरिका का प्रभाव पड़ा अत: वैसी सभी शैलियों को अमेरिकन नृत्य कहा जाने लगा । बैले का इतिहास हमें बताता है कि इसे रुचि परिवर्त्तन के अनेक दौरों से गुजरना पड़ा है जैसे कि बैले शुद्ध नृत्य है या यह तकनीकी वस्तु संग्रह की चमत्कारपूर्ण आंगिक अभिव्यक्ति है या यह नाट्य नर्त्तन है अथवा शैलीबद्ध अंग विन्यास द्वारा किसी कथानक का प्रस्तुतिकरण है । अपने सिद्धांतों से परे बैले एक प्रयोग प्रधान कला है जो बहुत से उच्चकोटि के तथा वैविध्यतापूर्ण बुद्धि वाले-आचार्यों द्वारा कठोरता से निर्धारित कार्य सम्पादन तालिका से अद्भुत है ।अत: बैले पाश्चात्य देशों की सबसे समृद्ध, आकर्षक और अनुशासित रंगमंचीय कला है। यह जितनी पारम्परिक है उतनी ही प्रयोगवादी भी । ऐसे अत्याधुनिक प्रयोगों में फ्रांस और अमेरिका अग्रेजी है । बैले में परम्परागत साधना के साथ-साथ नए-नए प्रयोगों की सम्भावनाएँ काफी है ।

ओपेरा–अंग्रेजी शब्द ओपेरा, इटालियन मुहावरे ओपेराइन म्यूजिक का संक्षिप्त शब्द है जिसका अर्थ है-संगीतिक कृति । यह उस मंचीय कला का नामकरण है जिसमें संगीत से युक्त कोई नाट्यलेख रहता है जिसे

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सामान्यत: वाद्यों के संगत के साथ गाया जाता है । ओपेरा की परम्परा पाश्चात्य देशों में अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है । ओपेरा के पाँच अंग होते हैं–प्रस्तावना, कथा, संवाद अभिनय, गीत तथा नर्त्तन । सम्पूर्ण कथा गीतों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है जिसकी दो शैलियाँ हैं– मूक अभिनयात्मक और संवादात्मक । ओपेरा की दूसरी शैली में केवल पद्य संवाद मात्र रहते हैं और संवाद के अतिरिक्त कथा भाग को गीत, अभिनय या नृत्यात्मक गति द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । कला में परिवर्त्तन के साथ-साथ ओपेरा में भी परिवर्त्तन हुए । ओपेरा की मूल विशेषता यह है कि धार्मिक सामाजिक कथाओं के कारण इसे समाज के प्रत्येक वर्ग का सम्मान मिला है, और ओपेरा ने भी संसार का भरपूर मनोरंजन किया है ।

अत: पाश्चात्य नृत्य न ही प्राचीन है और न ही इसका कोई प्रामाणिक ग्रन्थ है । पाश्चात्य नृत्यों में उद्दाम भावनाएँ एवं चपलताएँ अधिक रहती है । पाश्चात्य संस्कृति भौतिकवादी है। अतएव पाश्चात्य नृत्यों का ध्येय मुख्य रूप से जनमन का मनोरंजन करना है ।

प्रश्न

1. पाश्चात्य नृत्य शैली से आप क्या समझते हैं ?
2. पाश्चात्य नृत्य शैली का वर्गीकरण करें ।
3. बॉलरूम डॉन्स का वर्णन करें ।
4. 1820 ई० से 1910 ई० तक के लोकप्रिय नृत्यों के नाम लिखें ।
5. 19वीं शताब्दी के प्रचलित नृत्यों के क्या नाम थे ?
6. एरोबिक्स नृत्य को समझाएँ ।
7. बैले नृत्य को सविस्तार समझाएँ ।
8. ओपेरा किस मुहावरा का संक्षिप्त शब्द है ?
9. ओपेरा के कितने अंग हैं ? लिखें ।
10. ओपेरा नृत्य शैली का सविस्तार वर्णन करें ।

❑

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विविध

(ज्ञान विस्तार हेतु)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

1. कथक नृत्य के घरानों का वर्णन

कथक नृत्य का विकास प्राचीनकाल से चली आ रही कृष्ण लीला के अंतर्गत रास-नृत्य तथा ब्रजक्षेत्र में प्रचलित कुछ लोकनृत्य के आधार पर हुआ है । मुगलकाल में मुसलमान और हिन्दू राजाओं के दरबार में जब कथक नृत्य और उसके कलाकारों को आश्रय मिला तो उनमें उनकी संस्कृति और रुचि के अनुसार परिवर्तन होते चले गए । इसी अवधि में दरबारी नृत्यकार अलग-अलग स्थानों में अपनी-अपनी शैलियों का विस्तार करने में जुट गए और यहीं से घरानों की उत्पत्ति हुई । कथक नृत्य के शैलियों का तीन स्थानों में प्रचार-प्रसार हुआ जिसे तीन प्रमुख घराना के नाम से जाना जाता है । ये तीन मुख्य घराना है लखनऊ घराना, जयपुर घराना, बनारस घराना ।

लखनऊ घराना—लखनऊ घराने की नींव श्री ईश्वरी प्रसादजी ने रखी । श्री ईश्वरी प्रसाद इलाहाबाद जिले के हंडिया तहसील के निवासी थे । एक किंवदन्ती के अनुसार उन्हें स्वप्न के कथक नृत्य का पुनरुद्धार करने एवं इसे भागवत बनाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने आदेश दिया । ताकि भगवान की सारी लीलाओं को नृत्य के माध्यम से दिखाया जा सके । ईश्वरी प्रसाद जी उसी क्षण से इस कार्य में जुट गए और उन्होंने 80 वर्ष की आयु में इस कार्य को पूरा कर लिया । उन्होंने अपने तीनों पुत्र अड़गु जी, खड़गुजी और तलगुजी को नृत्य में पारंगत किया तथा उन्होंने कथक नृत्य का पुनरुद्धार करने की आज्ञा दी । तत्पश्चात् उनके पुत्र प्रकाश जी, दयालु जी और हरिलाल जी लखनऊ चले गए और यहीं से लखनऊ घराने का प्रचार-प्रसार एवं शैली का विकास हुआ । प्रकाश जी के भी तीन पुत्र हुए—दुर्गा प्रसाद, ठाकुर प्रसाद, और भानु प्रसाद । दुर्गा प्रसाद के तीन पुत्र हुए—बिन्दादीन, कालिका प्रसाद और भैरव प्रसाद । कालिका बिन्दादीन के नाम से चर्चित जोड़ी बनाकर इन्होंने नृत्य का काफी प्रचार प्रसार किया । बिन्दादीन ने हजारों ठुमरियों की रचना करके नृत्य में भाव पक्ष को सबल बनाया । उन्हीं के द्वारा आगे के वंशज भी नृत्य की शिक्षा लेते रहे, जिससे लखनऊ घराना पूरी तरह स्थापित हो गया । कालिका प्रसाद के तीन पुत्र हुए—अच्छन महाराज, शंभु महाराज और लच्छु महाराज । अच्छन महाराज के पुत्र बिरजू महाराज की ख्याति आजकल देश और विदेशों में फैली हुई है । बिरजू महाराज वर्तमान में लखनऊ घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं । इस घराने से संबंधित प्रमुख कलाकार दमयन्ती जोशी, रौशन कुमारी, शास्वती सेन आदि हैं । लास्य अंग की बहुलता इस घराने की विशेषता है । गत भाव एवं रास प्रदर्शन के लिए यह घराना प्रसिद्ध है । तालबद्ध भावों को जब नर्तक प्रस्तुत करता है तो निर्जीव कल्पना भी मानो सजीव हो जाती है । इस घराने में परण प्रिमलू संक्षिप्त में तथा लास्य प्रधान नृत्य अधिक नाचे जाते हैं । नृत्य के बोल भी कवित्त, छन्द तथा पखावज के बोल पर आश्रित होते हैं ।

जयपुर घराना—जयपुर घराने के संस्थापक भानूजी को माना जाता है । आज से लगभग डेढ़ सौ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

साल पहले भानूजी ने जयपुर घराने की नींव डाली । वे भगवान शिव के भक्त थे-और इन्हें एक सन्त द्वारा शिव तांडव की शिक्षा प्राप्त हुई थी । इन्होंने अपने पुत्रों को यह नृत्य सिखाया और फिर परम्परागत नृत्य को आगे बढ़ाया । इन्होंने तांडव नृत्य की शिक्षा अपने पुत्र लालजी और कानूजी को दिया । कानूजी के पश्चात् इनके दो पुत्र गोधाजी और शेखाजी इस घराने के प्रसिद्ध नर्त्तक हुए । गोधाजी के पुत्र हरीप्रसाद और हनुमान प्रसाद नृत्यकला में प्रवीण थे । इस प्रकार पुश्त दर पुश्त इस कला को प्रश्रय भी मिला और इसका विकास भी हुआ । जयपुर घराने का उदय भानू जी के द्वारा हुआ था जो तांडव नृत्य के उत्कृष्ठ कलाकार थे । अतः इस घराने में तांडव नृत्य का बहुत ही प्रभाव और महत्त्व है । इस घराने के प्रसिद्ध कलाकारों में श्यामलाल, चुन्नीलाल, दुर्गा प्रसाद, गोवर्धन जी, जयलाल सुन्दर प्रसाद जी हैं जिन्होंने भारत के कोने-कोने में इस घराने का प्रचार-प्रसार किया । जयलाल जी और सुन्दरलालजी की जोड़ी ने इस घराने का सर्वाधिक प्रचार किया । इस घराने से संबंधित अन्य कलाकार कार्त्तिकराम, पुंविया बहन राधेलाल रोहिणी-भाटे, फिरतूदास आदि हैं । तबला तथा पखावज के परण, चक्करदार बोल इत्यादि इस घराने में विशेष रूप से नाचे जाते हैं । विकट लयकारी तथा कठिन बोलों को प्रस्तुत करना इस घराने की अपनी विशेषता है । पैरों की तैयारी पर विशेष ध्यान दिया जाता है । चक्कर, तत्कार और लय बाँट का आश्चर्यजनक प्रदर्शन इस घराने का प्रभावशाली अंग है । बोल परण, पक्षी परण तथा एक पैर के चक्कर का प्रदर्शन इस घराने की विशेषता है । पैरों के संतुलन के बीच एक घुँघरू का आवाज लय के साथ निकालना इस घराने की अद्भूत प्रदर्शन है ।

बनारस घराना—यह घराना जयपुर घराने की ही एक शाखा है । राजस्थान के जानकी प्रसाद जब बनारस चले गए तो उनकी तथा उनके दो अन्य भाई दुल्हाराम तथा गणेशीलाल, ने वहाँ एक अलग घराना स्थापित किया और यही घराना आज बनारस घराना के नाम से विख्यात है । इसे जानकी प्रसाद का घराना भी कहा जाता है । इस घराने के प्रसिद्ध नर्त्तक जानकी प्रसाद, शिवलाल, सितारा देवी, गोपीकृष्ण, कृष्णकुमार कुन्दनलाल, दुर्गाप्रसाद इत्यादि है । इस घराने की विशेषता यह है कि यहाँ नृत्य के बोलों में तबला या पखावज के बोल नहीं लिए जाते, बल्कि शुद्ध नृत्य के बोल ही प्रयोग होते हैं । अंग - भाव की शुद्धता एवं मुद्रा पर अधिक ध्यान दिया जाता है । गति मुद्रा तथा अंग-भाव एवं बोलों की मौलिकता के कारण यह घराना जयपुर तथा लखनऊ घराने से पृथक दृष्टि गोचर होता है । कथक नृत्य में उपयुक्त तीनों घराना अपनी अपनी विशेषता एवं ख्यातिप्राप्त संस्थापकों के कारण प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय है । सभी भारतीय कथक नृत्यकार इसी तीनों घराने के संबंधित नृत्य करके इसका प्रचार-प्रसार कर रहे हैं । कहीं पैरों की तैयारी और चक्कर की विशेषता है तो कहीं लास्य, शृंगार एवं भाव की प्रधानता है तो कहीं अंग भावों की शुद्धता पर नृत्य केन्द्रित है । अतः तीनों घरानों के प्रतिनिधि कलाकार वर्त्तमान में अपने-अपने घरानों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रश्न

1. कथक नृत्य का विकास कैसे हुआ ?
2. घराना से आप क्या समझते हैं ?
3. लखनऊ घराने के गुणी नर्त्तकों के नाम बताएँ ।
4. जयपुर और बनारस घराने के संस्थापक कौन थे ?
5. लखनऊ एवं जयपुर घरानों की तुलना कीजिए ।

❑

माहरी - अर्थात् महत नारी या महान नारी। ये ईश्वर के समक्ष नृत्य करती थी। मंदिर के गर्भ गृह में भी इन्हें जाने की अनुमति थी।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. भारतीय संगीत की लिपि (Notation)

भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक बेहद महत्वपूर्ण पद्धति (Notation) है। तालिपि और स्वर लिपि पद्धति मुख्यत: उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय तालिपि स्वरलिपि पद्धतियाँ पूरे भारत में प्रचलित हैं। यह जानना बड़ा रोचक है कि गीतों की धुन और नृत्य के बोल तथा वाद्ययंत्रों पर बजाये जानेवाले ठेके और गत एकदम स्वतंत्र लिपि में लिखे जाते हैं। जिन्हें दुनिया भर के संगीतकार देखकर गा-बजा सकते हैं।

जिस प्रकार हमारा देश अनेक भाषा-भूषाओं के कारण अनूठा है वैसा ही अनूठापन हमारे संगीत नृत्य में भी है। उत्तर भारतीय तालपद्धति में तालों के लिए चिह्न अलग हैं, तालों की बनावट अलग है ठीक वैसे ही दक्षिण भारतीय ताल व स्वर पद्धति में बनावट का फर्क है, स्वर लिखने, लयकारी करने का ढंग भी अलग है। इसीलिए उत्तर भारतीय तालों में रूपक नाम के ताल में 7 मात्रा (Notation) होती है। पर दक्षिणी तालों में रूपक नाम के ताल में 6 मात्रा होती है पर उनके बनावट में अंतर होता है। उसी प्रकार एक ही स्वर समूह वाले राग उत्तरी स्वरलिपि व दक्षिणी स्वरलिपि में अलग-अलग नाम से जाने जाते हैं।

❑

प्रसिद्ध परवावज वादक के नाम- गुरु रामाशीष पाठक, पृथ्वीराज कुमार, श्री अरुण पाठक, पन्नालाल उपाध्याय, श्री भगवान बेहेरा, संजय उपाध्याय, सिद्धीशंकर।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. नृत्याचार्यों के चित्र

बिरजू महाराज

नीलम चौधरी

शोभना नारायण

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सितारा देवी

केलू चरण महापात्रा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

केलुचरण महापात्र

दुर्गालाल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

यामिनी कृष्णमूर्ति

सोनल मान सिंह

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रमादास (बिहार)

मधुकर आनन्द

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. नृत्य में प्रयोग होनेवाले वाद्ययंत्रों के नाम सचित्र

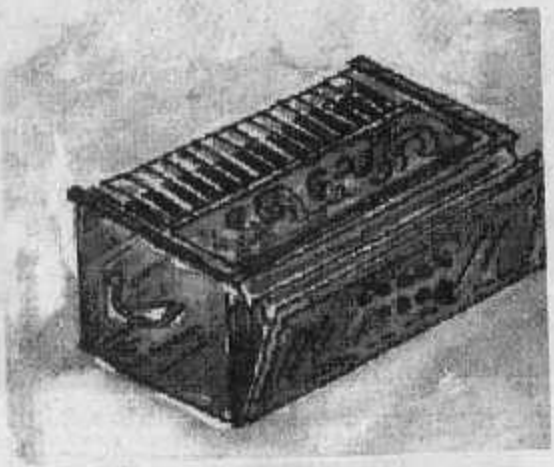

हारमोनियम

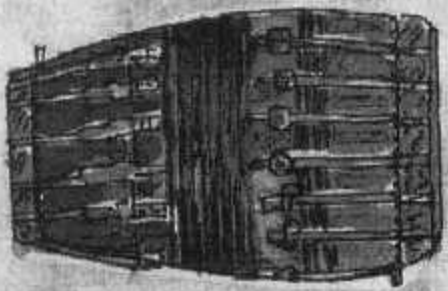

नाल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

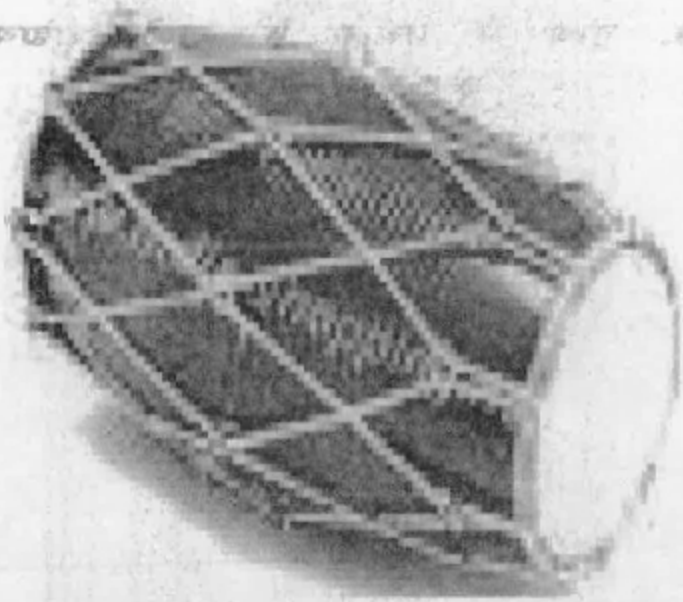

ढोलक

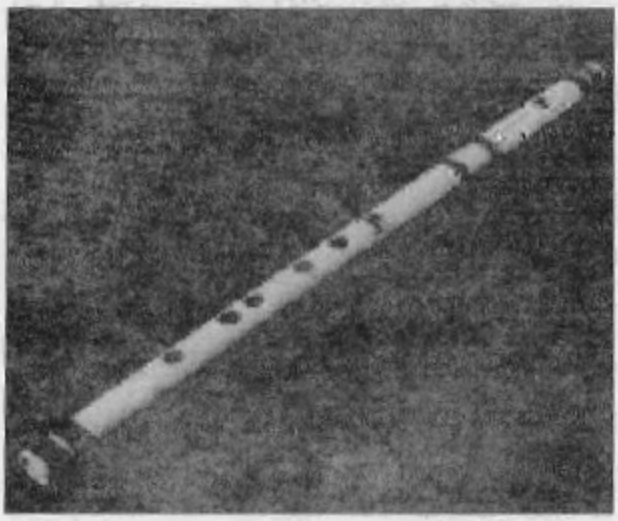

बांसुरी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तबला

भंभरी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

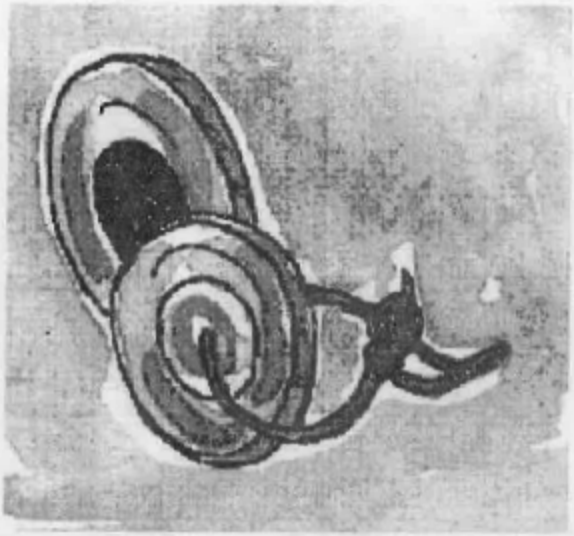

मंजिरा

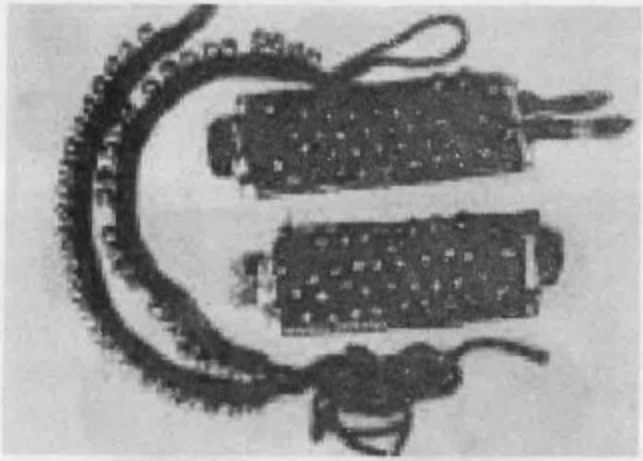

घुंघरु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

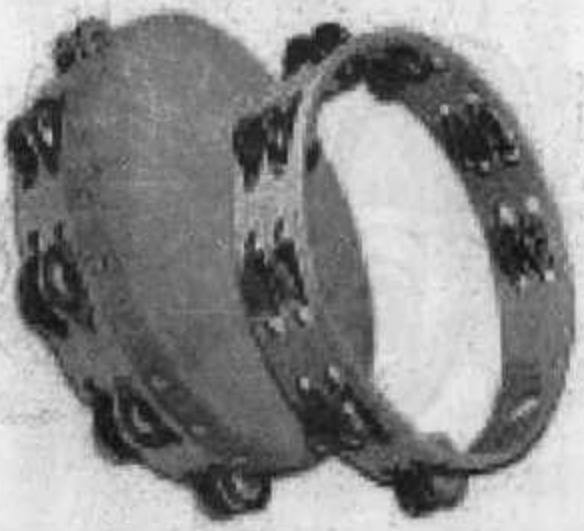

खंजरी

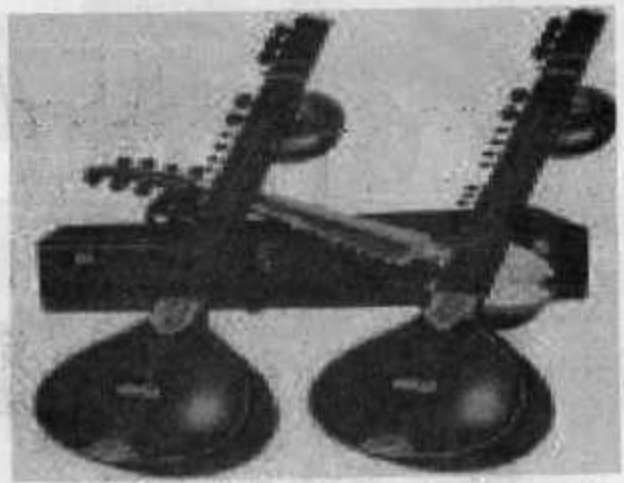

सितार

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. मुद्रा के प्रकार : सचित्र

पताका

त्रिपताका

अर्धपताका

कर्त्तरीमुख

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मयूर

अर्धचन्द्र

अराल

शुकतुण्ड

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मुष्टि

शिखर

कपित्थ

कटकामुख

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सूचि

चन्द्रकला

पद्मकोष

सर्पशीर्ष

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मृगशीर्ष

सिंहमुख

कांगूल

अलपद्म

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चतुर

भ्रमर

हंसास्य

हंसपक्ष

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

संदश

मुकुल

ताम्रचूर

त्रिशूल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

संयुक्त हस्त मुद्रा (चित्र)

कर्कट

स्वास्तिक

डोला

पुष्पुट

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उत्संग

शिवलिंग

कटकवर्धन

कर्त्तरीस्वस्तिक

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शकट

शंख

चक्र

सम्पुट

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पाश

कीलक

मत्स्य

कूर्म

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वराह

गरुड़

नागबन्ध

खट्वा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भैरूण्ड

अंजली

कपोत

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

6. भारतीय शस्त्रीय नृत्य शैलियाँ एवं संबंधित नृत्यों के गुरु, नर्त्तक और नृत्यांगनाओं की सूची-

(क) नृत्य-कथक (उत्तर भारत)

लखनऊ घराना
बनारस घराना
जयपुर घराना

गुरू एवं नर्त्तक, नर्त्तकी

1. गुरु ईश्वरी प्रसाद
2. गुरु बिन्दादीन महाराज
3. गुरु अच्छन महाराज
4. गुरु लच्छू महाराज
5. गुरु शम्भु महाराज
6. गुरु दुर्गा लाल
7. गुरु पं. बिरजू महाराज
8. सितारा देवी
9. रौशन कुमारी
10. दमयन्ती जोशी
11. कुन्दन लाल गंगानी
12. जय लाल
13. सुंदर लाल
14. गोपी कृष्ण
15. वैजयन्तीमाला
16. शाश्वती सेन
17. मालविका सरकार
18. उमा शर्मा
19. शोभना नारायण
20. मधुकर आनंद
21. नागेन्द्र मोहिनी
22. शिवजी मिश्र
23. नीलम चौधरी
24. रमा दास

(ख) भरतनाट्यम (दक्षिण भारत) तमिलनाडु

गुरु नर्त्तक एवं नर्त्तकी

1. मीनाक्षी सुंदरम पिल्लै
2. रूक्मिणी देवी अरूण्डेल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. तंजौर ब्रदर्स :-
(क) चेन्नइया पिल्लै
(ख) पोनइय्या पिल्लै
(ग) वाडिवेल्लू
(घ) शिवानंदनम्
4. बाला सरस्वती
5. यामिनी कृष्ण मूर्ति
6. सोनल मानसिंह
7. वैजयन्तीमाला
8. हेमा मालिनी
9. लीला सैमसंग

भरतनाट्यम

गुरु, नर्त्तक एवं नर्त्तकियाँ

10. सरोजा वैद्यनाथ
11. शान्त धनंजयन
12. उर्मिला सत्यानारायनन
13. पदमा सुब्रमन्यम
14. गीता चन्दन
15. डा० पुष्पा शंकर
16. स्टेला उप्पल
17. मालविका सरुक्कई
18. किरण सहगल
19. सुदीपा घोष

(ग) ओडिसी (उड़िसा)
महारी, देवदासी शैली
(गु० पंकज चरण दास)
गोटिपुआ शैली
(गु० केलुचरण महापात्र)

गुरु, नर्त्तक एवं नर्त्तकियाँ

1. गुरु पंकज चरण दास
2. केलुचरण महापात्र
3. देव प्रसाद दास
4. मायाधर राउत
5. संयुक्ता पाणिग्रही
6. इन्द्रणी रहमान
7. सोनल मानसिंह
8. प्रोतिमा बेदी
9. कुमकुम मोहंथी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

10. मिनती मिश्रा
11. माधवी मुदगल
12. शेरोन लॉवेन
13. डोना गांगुली
14. किरण सहगल
15. अरूणा मोहंती
16. सविता मिश्रा
17. सोनाली महापात्रा
18. दुर्गाचरण रणवीर
19. महादेव राउत
20. गंगाधर प्रधान
21. तम्माल पात्रा
22. गोविन्द चंद्र पाल

(घ) मणिपुरी नृत्य (पूर्वांचल)
मणिपुर का शास्त्रीय नृत्य

गुरु, नर्त्तक एवं नर्त्तकी

1. आमोदन शर्मा
2. अमूवि सिंह
3. तोमा सिंह
4. इबोबिशुक शर्मा
5. गुरु बिपिन सिंह
6. खेत्री टोम्बी देवी
7. विनोदिनी देवी
8. नैनोगोपाल चटर्जी
9. हरिउप्पल
10. अम्बाल तोमी देवी
11. धुनेश्वरी देवी
12. कलावती देवी
13. बिम्बावती देवी
14. प्रीति पटेल

(ङ) कुचिपुड़ी (आंध्रप्रदेश)
आंध्रप्रदेश का शास्त्रीय नृत्य

गुरु, नर्त्तक एवं नर्त्तकी

1. राधा राजा रेड्डी
2. स्वप्न सुंदरी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. उर्मिला सत्यनारायनन
4. नालिनी मिश्रा

(च) कथकली (केरल)
केरल का पुरुष प्रधान शास्त्री नृत्य

गुरु, नर्त्तक एवं नर्त्तकी
1. कलमंडलम गोपी
2. पी० के० बालगोपालन
3. अम्बुपाछिकर
4. टी० एस० जनार्धन
5. पी० ऐ० वेंकट
6. कारम् नारायनन पाणिकर

(छ) मोहिनी अट्टम (केरल)
केरल का स्त्रीप्रधान शास्त्रीय नृत्य

गुरु, नर्त्तक एवं नर्त्तकी
1. गुरु करूणा पाणिकर
2. गुरु भारती शिवाजी
3. गुरु राधा मरा
4. कनक रेलै

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXT BOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक : हेवा प्रिंटिंग वर्क्स, करमलीचक, मोहली रोड, पटना–800 008

https://www.studiestoday.com